ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

सितम्बर 2022, वर्ष 6, अंक 6

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services

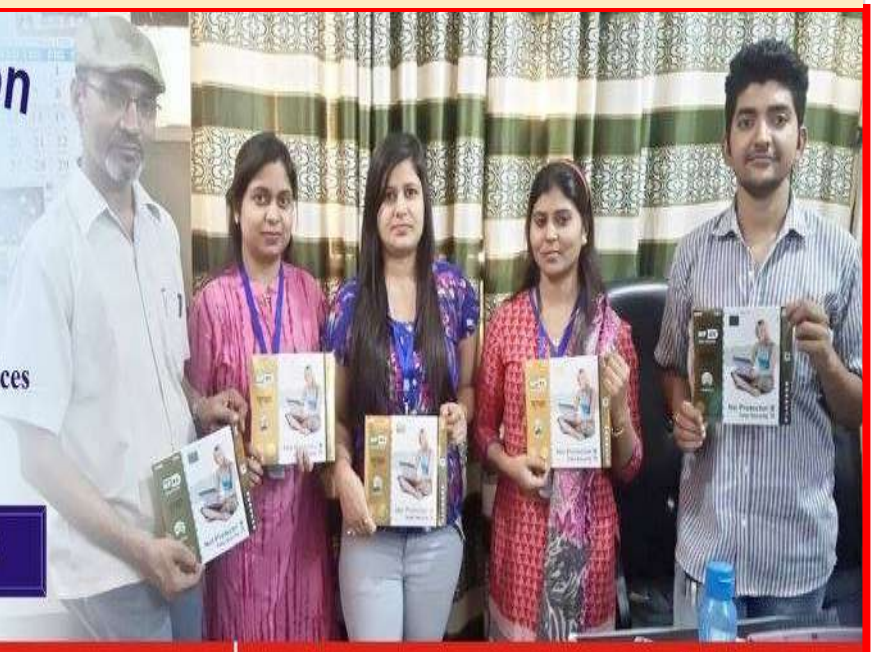

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

कबीर दास /6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

भोजपुरी साहित्य में प्रेम अउर सद्भावना–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/7–11

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

देह–अब्दुल गफ्फार/12
ललिता–दिलीप पैनाली/13
परदेसिया– जनक देव जनक/14–16
मेहरारू लोग के दिन–मीना धर पाठक/16–20
माटी के पूत–राजकुमार सिंह/20–21
उ का रहे– अभियंता सौरभ भोजपुरिया/22–23
बबुआ–डॉ रजनी रंजन/29–31
बेना–सविता गुप्ता/40

• कविता/गीत/गजल

हमार ना ह– डॉ शिप्रा मिश्रा/24
गजब माने होला बिहाने बिहाने–सन्नी भारद्वाज/24
गीत–सूर्य प्रकाश उपाध्याय/25
गाँव–डॉ कुमार नवनीत/25
गजल– मदन मोहन पाण्डेय/26
फुलवारी–दीपक तिवारी/26
ए भइया ! जिनगी के रहिया में–
राजीव नन्दन मिश्र/26
छदमी बनल बा छांह– देवेन्द्र कुमार राय/27
किताब–आलोक रंजन/27
कोखिये में मार देलु माई– अवधेश कुमार चौधरी/28
बरसात–डॉ सुरेन्द्र कुमार/28

• कविता/गीत/गजल

सबकर त अपने फेरा में रहत बा–
राम बहादुर राय231
पचरा गाइब–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/40
अपने घर के कोना में–विद्या शंकर विद्यार्थी/43
पितरपछ– केशव मोहन पाण्डेय/44

• अनूदित साहित्य

टूटी घड़ी– डॉ शारदा सिंह/21

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

गाँव के माटी के खुसबू से भरल गीत– रवि शंकर सिंह /32–33
झारखंड के राजधानी रांची के भोजपुरिया कवि–अंकुश्री/34–37
भोजपुरी साहित्यरू हाल फिलहाल
प्रो बलभद्र के आलोचना दृष्टि– जितेंद्र कुमार/37–39
धुआंला न जेकर चुहानी, ए बाबू – डॉ बलभद्र/45

• असि गंग के तीर

– डॉ. सुमन सिंह /46

• वार्ता/साक्षात्कार :

102 बरिस के हो गइनी भोजपुरी के बेजोड़ लोकगायक जंग बहादुर सिंह– मनोज भावुक/41–43

बड़का-बड़का बैनर, छोटका-छोटका सोच

अझुरहट के सझुरावत, रसता बनावत गवें–गवें आगु बढ़े के जवन तागत साहित्य से मिलेले उ कहीं अउर से भेंटाले कि ना, एह पर कुछ कहल एह घरी हमरा उचित नइखे बुझात। भोजपुरी साहित्य के धार के आपन बहाव ह, लहर ह, तरंग ह, हुहुकारल ह, फुफुकारल ह। ओही में आपन–आपन नइया लेके हिचकोला खात किनारा पहुँचे क ललक जिनगी के प्रान वायु लेखा बा। आजु भोजपुरी में जहाँ साहित्य के झोली भरा रहल बा, उहें एहमें ढेर विकारो आ रहल बा। जवने क हाल–समाचार समय–समय पर उतिरात रहेला। कई बेर साँच के साँच होखला के सबूतो बेहयाई का संगे मंगाला। अइसन करे वाला लो गिरोह आ गोल के संगे होला। अइसनका गिरोह के लोगन से नैतिकता के उमेद कइल कोइला के खदान में हीरा हेरले लेखा होला। अजुवो जात–पात, धरम आ क्षेत्र के रसरी साहित्यिको लोग धूरी में बर रहल बा। बरते भर नइखे ओकरा के ओढ़ के डउड़िया रहल बा। जेतने गोल–गोलबंदी, ओतने अलगा तरह के लीला। कादों सुने में त इहो आवता कि एही का चलते लीलाधर रणछोर कहाये लगलें। संस्था के चलावे वाला लोग मुँह देख देख के कुछो कह आ कर रहल बा। बड़का–बड़का बैनर से लेके छोटका तक एक्के संगे कदम ताल क रहल बाड़ें। एही में दक्षिण पंथ आ वामपंथ आपन–आपन राग छेड़ रहल बा। बाउरो का संगे ठाढ़ होखे वालन के बड़ जमात बा। बिरोध चीन्ह–चीन्ह के हो रहल बा। अइसन करे वाला लोग दोसरा पर अंगुरियों उठा रहल बा। मौलिकता के बात उहो कर रहल बा, जेकर मौलिकता से नया भा पुरान कवनों तरह के परस्परी नइखे। सभे सेवा के दंभ देखा रहल बा आ हमनी देख रहल बानी सन।

कुछ अइसने झंहावतन में अझुराइल मनई के मन उचाट होखे लागे त संसय न करे के चाही। अपना ओही मन छान पगहा में ओनच के सोझे चलवला के चलते ई अंक उपरियाए जा रहल बा। ई अंक अपना भीतरि नीमन कहानियन के लमहर श्रृंखला का संगे कविता, गीत, गजल, समीक्षा आ आउर बहुत कुछ लेके आ रहल बा। परयास त बा कि ई क्रम चलत रहे बाकि कबले चलत रही,ई कहलो मुस्किल बा। भोजपुरिया समाज हर बरीस लेखा असवों पछिला एक महिना से त्योहारन के जिये शुरू क चुकल बा आ ई क्रम अगिला अगहन तक चलते रही। पितर–पुरुखा लोग के माथ नवावत माई के अरचना करत अन्नदाता के अगहनों के खुसी भेंटाई। बाकि असों एगो लमहर क्षेत्र सूखा के चपेट में आवत देखात बा, जवन सुखद त नइखे। बाढ़ आ सुखाड़ के जीवटता के संगे जीये वाला भोजपुरिया समाज एहु सूखाड़ के अपना रंग में जीये के परयास जरूर करी। अइसना में भोजपुरी साहित्य सरिता अपना के सभका में मेझरत–मेझरात डेगे–डेग आगु सरके ला अगरा रहल बा। एह अगरइला के राउर सभे क नेह–छोह पहिले लेखा आगहूँ भेंटात रही,एकर पूरा बिसवास बाटे।

■■

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

मन न रँगाये

मन न रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा।।

आसन मारि मंदिर में बैठे,
नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा।। 1

कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौले,
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैले बकरा।। 2

जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले,
काम जराय जोगी होइ गैलै हिजरा।। 3

मथवा मुड़ाय जोगी कपड़ा रंगौले,
गीता बाँचि के होइ गैले लबरा।। 4

कहहि कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरबजवाँ बाँधल जैवे पकरा।। 5

■■

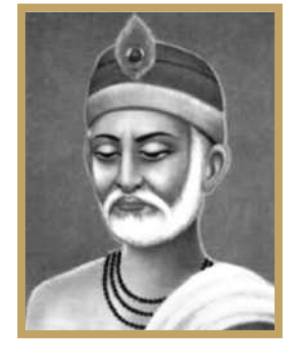

कबीर दास

जन्म : 1438 ई.(अनुमान)
वाराणसी
मृत्यु : 1588 ई. (अनुमान)
मगहर

भोजपुरी साहित्य में प्रेम अउर सद्भावना

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

लोक में रचल–बसल भोजपुरी भाषा आ ओह भोजपुरी भाषा के मधुरता आ मिठास, अपना जड़ से मजबूती से जुड़ल समाज आ ओह समाज में पसरल रीति–नीति के आपन अलग विशेषता बाटे। अपने एही विशेषता के संगे अलग– अलग सोपान गढ़त, ओके सजावत–सँवारत, ओकरे भीतरि के सुगंध के अलग–अलग तरीका से अलग–अलग जगह बिखेरत भोजपुरी भाषा सदियन से गतिशील रहल बा आ अजुवो ले बा। अपना रसता में आवे वाला कवनो झंझावत से उपरियात, समय के मार के किनारे लगावत

अपने भीतरि के ऊष्मा जस के तस अपने में समुआ के रखले बिया। भोजपुरी माटी अपने इहाँ के पलायन के पीड़ा के भलहीं महसूस कइलस, ओकरा दुख से दुखियो भइल बाकि ओहसे कबों ना दबाइल। सुन के त इहे लागेला कि एह माटी के लोग जहवाँ गइल अपने संगे आपन भाषा, रीति–रेवाज,तीज–त्योहार के जोगा के रखलस। भोजपुरिया समाज में मेल–मिलाप आ सहज संवाद के गहिराह परंपरा रहल बाटे। अपना जनम भूमि से दूर भइला का बाद आपन भाषा बचावल आ संस्कार जोगावल आसान त नाहिए होला बाकि भोजपुरिया लोग अपना भाषा आ संस्कार के कबों ना भुलाइल भा कबों अपना से दूर ना कइल. स। एकरा पाछे कारन त इहे बुझाला कि भोजपुरी, साहित्य के संगही संस्कार के भाषा पहिलहूँ रहल आ अजुवो बाटे। अपने एही विशेषता का चलते भोजपुरी दिन दूना रात चौगुना का हिसाब से तरक्की करत अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में आपन पहिचान बना चुकल बा। आजु ई भाषा 14 गो देसन में बोलल जा रहल बा, कई देसन के राजकीय भाषा बन चुकल बा। लिङ्ग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डेवी जी एकरा के दुनिया में सभेले तेजी से बढ़त भाषा का रूप में दर्जा देले बाड़ें।

सभे के मालूम बा कि जवना साहित्य में हित के भावना होले ओकरे के साहित्य कहल जाला। अब जवना भाषा के साहित्य हित के बात करत होखे,उहाँ परेम आ सद्भाव त होखबे करी। अपना एह बाति के पक्ष में हम गद्य अउर पद्य दूनों के जब देखे लगनी त हमरा परेम अउर सद्भाव के हजारन उदाहरन भेंटल।

भोजपुरी के बाति बेगर गीत, संगीत आ साहित्य के कइल बेमानी लागी, एही से पहिले एकरे पर दीठि डारल उचित रही। सामाजिक सद्भाव के बात होखे आ भोजपुरी के आदि कवि कबीर के जिकिर न होखे, भला अइसन कबों हो सकेला। रूढ़िवादिता आ धर्मांधता के लमहर बिरोध कबीर के काव्य में भेंटाला। कुछ उदाहरन देखे जोग बा –

निगुरा बाभन ना भला गुरुमुख भला चमार
इ देवतन से कुत्ता भला नित उठ भोंके द्वार।

कांकर पाथर जोर के मस्जिद लियो बनाय
ता चढ़ी मुल्ला बांग दे का बहरा हुआ खुदाय।

समाज में सद्भाव के जोगावे ला कबीर बाबा कहले बानी–

एक जोत से सब उत्पन्ना का बाभन का शूद्र।

परेम अउर सद्भाव के लमहर जिकिर बाबा गोरख नाथ के साहित्यों में भेंटाला। उहाँ के एगो रचना के बानगी देखे जोग बा–

हसिबा बोलिबा रहिबा रंग।
काम क्रोध न करिबा संग।।
हसिबा षेलिबा गाइबा गीत।
दिढ़ करि राषिबा अपना चीत।।
हसिबा षेलिबा धरिबा ध्यान।
अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान।।
हसै षेलै न करै मत भंग।
ते निहचल सदा नाथ के संग।।
हबकि न बोलिबा ढबकि न चलिबा
धीरे धरिबा पांव।
गरब न करिबा सहजै रहिबा भणत गोरष रांव।।
धाये न षाइबा भूषे न मरिबा
अहनिसि लैब ब्रह्म अगिनि का भेवं
हठ न करिबा पड़या न रहिबा
यूँ बोल्या गोरष देवं।।

एहु घरी भोजपुरी में जवन साहित्य के

सिरजना हो रहल बा, ओहू में परेम आ सद्भाव खुबे भेंटात बा। नवहा कवि नुरैन अंसारी के इ गजल देखीं सभे–

दौर नफरत के एक दिन ठहरबे करीं!
प्रेम पावन ह, घर–घर पसरबे करीं!

रिश्ता कीना–कपट से कहाँ ले चली,
जे छल करीं , उ दिल से उतरबे करीं!

कबले जिनगी के रतिया अनहारे रहीं,
जोत मन में , पिरितया के जरबे करीं!

उहें भोजपुरी के युवा तुर्क केशव मोहन पाण्डेय एगो अलगे अंदाज में प्रेम के परिभाषा गढ़ रहल बाड़ें–

''हमहूँ ते तहरे पर लुभा गइनी,
बेली अस फुला गइनी
अपना के भुला गइनी हो।
ए सँवरो! चाँन– सुरूज जइसन अँखिया से
हम भकुआ गइनी हो"।

प्रेम अउर सद्भाव के भोजपुरिया तुलसीदास राम जियावन दास 'बावला' के नजर से देखल जाव–

''प्रेम सद्भाव रहे सभसे लगाव रहे
कहीं न दुराव न त कहीं हड़ताल हो
न्याय हो कचहरी में पहरी विकास करै
एक रस डहरी न कहीं ऊंच खाल हो
एकता अखंडता क दियरी जरत रहे
पियरी पहिर के सिवान खुसहाल हो
देश क विकास होय गली गली रास होय
यहि विधि शुभ शुभ शुभ नया साल हो''

प्रेम अउर सद्भाव के, आपुसी लगाव–जुड़ाव के बाति आनंद संधिदूत के नजर में त अइसन बा कि पढ़ते आँखि लोरा जाले–

''गोरुओ गोड़वा रोकैला बछरुओ गोड़वा रोकैला
कइसे जाईं जात खानि गोड़वो गोड़वा रोकैला
गेंदा आ गुलाब गोड़वा रोकैला त रोकैला
गाँव गइले गाँव के धतुरवो गोड़वा रोकैला''

भा एकरा के देखीं–

''रात, फूल छितरउए
तोहार सपना
हँसि–हँसि मुसुकउए
तोहार सपना।
ओठँघल जानि के सरिरिया के अतमा
मन अभिलाख बन तरई चनरमा
भरि नभ उधिअउए, तोहार सपना। रात0''

प्रेम न बाड़ी उपजै में चन्दा के कहनाम– आदमी कमर कस के प्यार के मैदान में ना उतरेला, प्यार हो जाला ।

भोजपुरी साहित्य प्रेम के कविता आ गीतन से भरल–पूरल आ हुलसात सोझा आवेले। एगो इहो रचना देखीं सभे–

कूक गइल कोइलिया, बेध गइल हियरा
दीप गइल अंतर में सांचल ऊ दियरा
अचके में राधा के याद उमड़ि आइल
मोहन से दूर, तबो मोहन के नियरा।

समाज के एगो लमहर बेमारी दहेज से बिलगाव आ एक दोसरा से जोड़े के बाति भोजपुरी साहित्य में खूब मिलेला । एगो पारंपरिक गीत में देखीं सभे–

''किया समधी लूटबि गइया से भैंसिया
किया समधी बखरी हमार
नाही समधी लूटबि गइया से भैंसिया
नाही समधी बखरी तोहार
हम त लूटबि ओही सुहवा कवन देई
भर जइहें बखरी हमार।''

मानवीय प्रेम गीत के जबर उदाहरण भोजपुरी अस्मिता के प्रतीक माने जाये वाले महेंदर मिसिर जी के लगे भरमार बा–

''पटना से बैदा बोलाई द, नजरा गइली गुइयाँ
छोटकी ननदिया बनेली सौतिनिया
ननदो के गवना कराई द, नजरा गइली गुइयाँ।''

''होत परात चल जाइहों मोरे राजा
तनिक भर बोल बतिया ल मोरे राजा''

''आधी आधी रतिया के पिहिके पपीहरा
से बैरनिया भइलें ना
मोरा अँखिया के निनियाँ
से बैरनिया भइलें ना''

''अंगुरी में डसले बिया नगिनिया रे ननदी,
दियरा जरा दे। ''

रामजी सिंह के प्रेम क एगो रंग –

''बार उज्जर भइल बा मरद के
लट करिया मेहरिया के बाटे।
आँखि उनुका मिरिग माति देले
दोस उनुका नजरिया के बाटे॥''

भिखारी ठाकुर जी रस सिद्ध कवि रहसु । उनहूँ के इहाँ प्रेम कमतर नइखे–

जनकपुर के नारी लोग के मन के बात उकेरत भिखारी बाबा खुल्ला परेम के घोसना कइले बारन–

''एक मन करेला अकेले बतियइतीं, हाय रे जियरा
कहत भिखारी परदा खोल, हाय रे जियरा। ''

''कांचे नीन दिहलन जगाई हो, ननदी तोहार भइया।''

''अतना सुनत धनी, खोललीं केवरिया से
दुअरा पर देखे पिया ठाढ़ रे साँवरिया।''

''पिया गइलें कलकतवा, ए सजनी।
गोड़वा में जूता नइखे,सिरवा पर छतवा ए सजनी
कइसे चलीहें रहतवा, ए सजनी।''

''पिया निपट नदनवा, ए सजनी
हमरा घोंटात नइखे कनवाँ भर अनवा, ए सजनी
चाभत होईहें मगही पनवाँ, ए सजनी।''

मांसल परेम राधा कृष्ण के परेम में बदल जाला भा निरगुनिया हो जाला

''कहत भिखारी मनवाँ करेला हर घरिया हो उमरिया भरिया ना
देखत रहतीं भर नजरिया हो, उमरिया भरिया ना।''

सामाजिक सद्भाव के संगे समाज के जगावे के कामो भोजपुरी साहित्य में खूब भेंटाला। गोरख पाण्डेय जी के ई रचना देखीं–

''समाजवाद बबुआ धीरे–धीरे आई
हाथी से आई/घोड़ा से आई
अंगरेजी बाजा बजाई। समाजवाद बबुआ... ।''

प्रेम आ श्रिंगार एगो सिक्का के दू गो पहलू बाड़न। फेर अलगा कइल मोसकिल होखबे करी। आई देखल जाव कैलास गौतम जी कविता –

''आँख न ठहरै रूप के आगे
रूप देख बिछिलाय
जिनिगिया लहर लहर लहराय
खेत भरल खरिहान भरल हौ
भरल–भरल हौ अँगना
नई नई हौ देह सुहागिन
नया नया हौ कंगना
रितु आवै रितु जाय, रहनियाँ
सौ–सौ झोंका खाय।''

भोजपुरी के चर्चित पत्रिका 'पाती' प्रेम कविता के विशेषांक लेके आइल रहे। ओह अंक पत्रिका के संपादक साहित्य अकादमी के भाषा सम्मान से सम्मानित साहित्यकार डॉ अशोक द्वि वेदी जी क अपने संपादकीय में लिखले बाड़न–

'' लोग या त प्रेम के गलत माने निकललस या एकरा के वर्जित आ उपहास जोग मानल। ओह लोगन के साइत पता ना रहे कि 'प्रेम' माइयो–बाप , भाइयो–बहिन, पति–पत्नी आ नाती–पोता क होला। एह जुग में प्रेम आदमी से बेसी धन, बल , कुरसी , घर–दुआर का संगही ताबर–तोर लिखल आ छपलको से होला।

लोक भाषा भा बोली में श्रेष्ठ काव्य लिखे वाला मैथिली के विद्यापति, भोजपुरी के अनगढ़ कबीर,अवधी के जायसी,तुलसी , ब्रज के सूरदास, मीरा,रसखान आ घनानन्द जइसन लोगन के लगावल प्रेम छुटे वाला रहे कि आजु का कवियन से छूटी(आदत) अभिव्यक्ति के लकम ?

'छिनहिं चढ़ै छिन उतरै' वाला प्रेम त बो खार हउवे । कबीर एही से 'अघट प्रेम पिंजर बसै,प्रेम कहावै सोय' कहत रहलें। उनुका प्रेम में ' रोम रोम पिउ पिउ करै' आ उनके ' रोम रोम पिउ रमि रहा' के परतीति होखे। एही से उनके हरमेसे 'जित देखूँ तित तूँ' नजर आवे। उनका आँखि में जवन सुघरई वाली छवि एक बेर समा गइल, तवने रही, ओमे कजरो के रेखि लगावे के गुंजाइस नइखे – ' कबीर काजर रेखहूँ अब त दई न जाय, नैनन प्रीतम रमि रहा दूजा कहाँ समाय'। 'प्रेम' कबीर का लेखे खाली जिये वाला तत्व ना बलुक सार तत्व आ परम तत्व बन गइल रहे। ई प्रेम लौकिक धरातल से उठि के अलौकिक हो गइल रहे।

धरीक्षन मिश्र, मोती बी. ए., अनिरुद्ध, हरेन्द्र देव नारायण, भोलानाथ गहमरी, 'बावला', सुंदर, राम नाथ पाठक 'प्रणयी', प्रभुनाथ मिश्र, परमेश्वर शाहाबादी आदि कवियन का चलते विकसत गीत–चेतना बदलत समय में रागात्मक संवेदना

के प्रवाह निरंतर निखरत गइल। नया नया भाव बोध का साथ विविधता में प्रगट भइल बा ओमे निजता का संगे स्वतन्त्रता , प्रेम आ समानता के सामाजिक भाव बोध बा। ''

भोजपुरी के गजल के जनक 'जगन्नाथ जी के एह गजल से प्रेम के देखल जा सकत बा–

''प्रीति से आँखि चार हो जाई।
प्रीति छन में लखार हो जाई।

आगि नेहियाँ क झवाँइल नइखे
जबे खोरीं अँगार हो जाई।''

पाण्डेय कपिल प्रेम के परिभाषित करत कह रहल बाड़ें –

''भइल प्यार के ई असर धीरे–धीरे
मिलत जब नजर से नजर धीरे–धीरे

लगावत रहस ऊ भले मुँह प ताला
नजर सब बता दी मगर धीरे–धीरे''

उहें सतीश प्रसाद सिन्हा के ई गीत कइसे भुला सकत बा–

''मितवा सनेही के आइल हऽ पाती
हमरा अंगनवा में धरि गइल बाती
तन–मन पिरितिया में अइसन नहाइल
नेहिया में गीत सराबोर हो गइल।''

प्रेम कविता आ गीत के बात होखे आ गीत पुरुष हरिराम द्विवेदी के पातरि पीर के चरचा बिना पूरा कइसे हो सकत बा। उहें के कुछ पांती देखीं–

निरमल नेहिया रहली बड़ टहकार
कउने कारन नहकै भइल अन्हार।
इहै सोचि के हियरा होय अधीर
गहिरी होतइ जाले पातरि पीर।

परेम के बाति गजल, कविता भा गीते भर में कहल गइल होखे, इहों बात नइखे । पारंपरिक कजरी के रूप में खुबे गवाइलो बा। जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के आजु के एगो चर्चित कजरी में प्रेम के बाति नीमन से कहल आ बूझल गइल बा। जवना के जरूर देखीं सभे–

''बरसेला मेघ जलधार हो कि
सावन में फुहार परे बलमू॥2॥
फुहार परे बलमू,फुहार परे बलमू 2
सावन मे फुहार परे बलमू॥
तोहरे ही नेहिया में उठेला हिलोरवा 2
आवे जब सुधिया तोहार हो कि
सावन मे फुहार परे बलमू॥

राति भर सेजिया पे निदियों न आवेला 2
अइबा तबे होई गुलजार हो कि
सावन मे फुहार परे बलमू॥

पोरे पोर बिरहा में मातल देहिया 2
बूझा तनि बतिया हमार हो कि
सावन मे फुहार परे बलमू॥ ''

नेह का आ कइसन होला, एकरा के जाने आ बूझे खातिर भोलानाथ गहमरी के ई रचना के समुझल बहुते जरूरी लागता। रउवो पढ़ीं –

''कींचड़ से नील कमल दियना से कजरा
चिटुकी भर नेह से सँवरि जाला जियरा !

जब जब किरिनिया अगिन बरिसावे
धरती के तप से सागर उठि धावे
बूँद बूँद बनि के बरसि जाला बदरा !

तनिकी भर तेल से धधाइ जरे बाती
छन भर में माँग भरे रात अहिबाती
बिहँसि उठे भीतर के रूप–रंग चेहरा !

जिनिगी के साध पले मन में हर ढंग के
काँटन के बीच जइसे फूल कइ रंग के
जे पावल गंध भइल गरवा के गजरा !
चिटुकी भर नेह से सँवरि जाला जियरा !! ''

उहें डॉ अशोक द्विवेदी क प्रेम के देखे आ देखावे के अलगे नजर बा। उहाँ के पाती के प्रेम कविता विशेषांक में आपन बात बड़ बेबाक ढंग से रखले बानी। उहाँ के एगो रचना देखीं–

''पिहिके फेरू पपिहरा
चीन्हल–जानल पीर लगे
तहरा सुधि में छटपटात मन
आज अधीर लगे।
जिभिया चाटि दुलारत बछरू
गइया जब हुलसे
नेह के आँच बरफ पघिले
बन परबत नदी हँसे
छछनल जिया जंतु जुड़वावत
नदिया–नीर लगे।''

भोजपुरी साहित्य में प्रेम पर प्रबंध काव्य तक लिखाइल बा। मार्कन्डेय शारदेय के 'दीपशलभ' अइसने एगो एकांगी प्रेम पर आधारित प्रबंध काव्य बाटे। ई काम भोजपुरी में पहिलहुं भइल बा। बाकि एहर ढेर दिन के बाद भोजपुरी में ऐतिहासिक प्रसंग पर कवनो प्रबंध काव्य आइल बा,जवने के भाषा संस्कृतनिष्ठ बा आ उ अपने में भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा के नीमन से समेटले बा। ई प्रबंध काव्य कुल सात खंड में बा।नायक सुरनाथ शर्मा आ नायिका मेहरुन्निसा के चरित्र के भारतीयता के चासनी में सउन के परोसल एह प्रबंध काब्य के रचनाकार बाड़ें आदरणीय मार्कन्डेय शारदेय जी। रचनाकार के रूप में आदरणीय शारदेय जी एह प्रबंध काव्य के नायक सुरनाथ शर्मा आ नायिका मेहरुन्निसा के संगे भरपूर न्याय कइले बाड़ें। काव्य धारा बहुते सरसता के संगे बहल बा। एह प्रबंध काव्य के नायक सुरनाथ शर्मा नायिका मेहरुन्निसा से एकांगी प्रेम करे लागत बाड़ें । उ अपना प्रेम में सफल नइखे हो पावत बाकि आजु के समय लेखा उ नायिका के कवनो पीड़ा नइखे पहुंचावत आ ना त उनुका कवनो कृत्य से समाज में कवनो बाउर सनेस जाता। नायक अंतिम में पश्चाताप के आगि में जरत आध्यात्म के ओर चल देत तारें, मने उ अपना प्रेम के त्याग करत एगो आदर्श के स्थापित करे के प्रयास करत बाड़ें,जवन एह भारतीय संस्कृति के सारभौमिक साँच बा।

भोजपुरिया समाज अपने रीति–रेवाजन के जी भर जियेला,बरतेला आ ओहमे सउनाइल रहेला। जब भोजपुरिया समाज में मनोरंजन के कवनो साधन ना रहे त लइकन–बचवन के बझावे–मनावे खाति जवन सभे ले कारगर उपाय रहल, उ कहनी सुनल–सुनावल रहल। ओह चिजुइयन के जोगावे, सइहार के राखे आ परोसे के जिमवारी दादी–नानी के पिटारा के रहे।मने कहनी के बात होखे त दादी–नानी के इयाद टटका हो जात रहे। कहनी सुने–सुनावे के एगो खास रवायत रहे जेहमें कहवइया सुनवइयन से हुंकारी परवावत रहे। भोजपुरी साहित्य जगत एह हूब के खूब महसूसबों करेले आ अपने ओह सुघरई के लोगन के सोझा परोसबों करेले। 'भोजपुरी जनपद' – एगो भोजपुरी के पाक्षिक पत्रिका 1969 में प्रेमकथा विशेषांक राधा मोहन राधेश जी के सम्पादन में लेके आइल रहे। जवना में प्रेम से सराबोर 12 गो कहानियन के रसधार बहल रहे। एकरा इतर भोजपुरी साहित्य के पत्रिका 'पाती' प्रेम कथा विशेषांक निकाल चुकल बा। हाल–फिलहाल में परेम आ सद्भाव पर कई गो लेखक आ लेखिका लोगन के किताबों आइल बा। जवना में डॉ सुमन सिंह के 'हूक–हुंकारी' , डॉ प्रेमशीला शुक्ल के 'जाये के बेरिया' , डॉ रजनी रंजन के 'अकथ प्रेम' आ मधुबाला सिन्हा के 'अंखुआइल शब्द' पढे आ बूझे जोग बा।

गंगा प्रसाद 'अरुण' के ''प्रेम न बाड़ी उपजै'' जइसन किताबि जवन प्रेम पत्र के संग्रह बा,रचाइल आ भोजपुरी साहित्य जगत के परोसा. इल बा।

भोजपुरी साहित्य में प्रेम आ सद्भाव के बाति एह भाषा में लिखाइल उपन्यासों में उपन्याकर लोग खूब दिल खोल के आपन विषय बनवले बा। उदाहरन खातिर कुछेक के बात रा खल जरूरी बुझाता। भोजपुरी के पहिलका उपन्यासकार पं रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'बिंदिया' पूरे का पूरा सामाजिक सद्भाव आ नारी विमर्श के बात उठवले बा। ई उपन्यास 1956 में प्रकाशित भइल रहे, तब कउनों अउर साहित्य में नारी विमर्श के बाति सुगबुगातो ना रहे। प्रेम के विषय बना के लिखाइल पाण्डेय कपिल के उपन्यास 'फूलसुंघी' आ पं रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'महेंदर मिसिर' सराहे जोग उपन्यास बाड़ें सन। उहें डॉ अशोक द्विवेदी के उपन्यास 'बनचरी' भावपूर्ण प्रेम कथा के बहाने मानव मूल्य आ सामाजिक सद्भाव के जोगावत सोझा आइल बा। डॉ अशोक लव के एगो चर्चित उपन्यास 'शि खरों से आगे' के भोजपुरी अनूदित संस्करण 'शि खरन से आगे' जवना के अनूदित केशव मोहन पाण्डेय जी कइले बानी, एहु उपन्यास में आजु के जुग के प्रेम के अपना रंग–ढंग से परोसल गइल बा, जवन पढ़े जोग बा।

भोजपुरी साहित्य के लमहर कैनवास से प्रेम आ सद्भाव पर आधारित कुछ रंग बटोरे के परयास भर हमरा से हो पवले बा। सगरे के बटोर के परोसे खातिर लमहर समय आ गम्हीराह शोध के जरूरत बाटे, जवन अतना हाली हो पावल संभव नइखे।तबो जवन बटोराइल बा उहो कम नइखे। एकरा के भोजपुरी साहित्य में प्रेम आ सद्भाव के बानगी त मानले जा सकेला।

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

देह

■ अब्दुल गफ्फार

हमार छोट देवर हमेशा हमरा के बड़ बहिन के सम्मान देहलन। देवर भौजाई के बीच मजाक कौन चीज होला हम ना जननीं। ऊ आपन मन के हर बात हमरा से शेयर करत रहलन। कॉलेज में जौन लड़की से प्रेम करत रहलन उनसे भी हमसे भेंट करौलन। हमार दुनू लइकन के हरदम अपना गर्दन के माला बनौले रहलन।

एक दिन अचानक हमार पति एक्सीडेंट में हमनी के छोड़ के चल देहलन। हमार मांग उजड़ गईल। हम विधवा हो गईनी। घर सूना हो गईल। लइका टुअर हो गईले।

कुछ दिन बितला के बाद एक दिन हमार सास ससुर देवर के बुला के कहल लोग कि बाबू हमनी के समाज के चलन रहल बा कि बड़ भाई के गुजरला के बाद अगर भौजाई नया उमिर के होखे, आ देवर कुवांर होखे त देवर भौजाई में बियाह कर देवे के चाहीं।

एतना सुन के देवर जी भड़क के कहलन के तोहनी के जाने ल जां कि हम अपना भौजाई के हमेशा बड़ बहिन मनले बानी। देवर भौजाई के रिश्ता भी हमनी में कब्बो ना रहल। त बताव+ जा भला बहिन से कोई बियाह करेला।

सास ससुर समझावल लोग कि बेटा बहिन मानत रहल+ ह। अब विधि के विधान माने के पड़ी। जवान भौजाई के सामने लमहर उमिर पड़ल बा। ऊ कैसे कटी। जवानी में कब्बो उनकर गोड़ खाले ऊंचे पड़ जाई त खानदान के का इज्जत रही! आखिर तोहार भी शादी बियाह कहीं ना कहीं त होखबे करी। त काहे ना घर के इज्जत घर ही में रह जाओ! उनकर जिन्दगी भी पार घाट लाग जाई आ तोहार भाई के आत्मा भी खुश हो जाई।

हम सब देखत सुनत रहनीं बाकिर परिवार के ए मैटर में हमरा बोले के इजाजत ना रहे। ना ना करत चार महीना बीत गईल। हीत नात के भी दबाव पड़े लागल। चार महीना के मान मनौव्ल के बाद आखिर देवर जी के झुके के पड़ल।

अब हमरा सामने धर्मसंकट खड़ा हो गईल कि छोट भाई समान देवर के साथे सेज सजावल कैसे संभव होई।

लेकिन देवर जी सुहाग रात के आवते ही ई कह के हमार दुविधा दूर कर दिहलन की हम तोहके बहिन मनले बानीं त ओकर मर्यादा के पालन होखे के चाहीं। मर्यादा भंग ना होखे के चाहीं। भले समाज के नजर में हमनी के पति–पत्नी बनके रहल जाई बाकिर अंदर भाई बहिन के रिश्ता के पवित्रता बरकरार रखल जाई।

हमहूँ खुश, ऊहो खुश आ सास ससुर भी खुश।

साल भर में जब बच्चा आवे के कौनो खुशखबरी ना मिलल उम्मीद त सास ससुर के शक भईल। ऊ लोग माहे माहे समझावे लागल। ऊंच नीच देखावे लागल। हमनी के लक्षमण रेखा कब्बो ना पार कईनी जान।

हम दू महीना खातिर नैहर गईनी लेकिन चार महीना रह गईनी। एक दिन ससुराल से फोन आइल कि देवर जी आत्महत्या कर लेहलन। सुन के हम पगला गईनी। हकासल पियासल जब हम घरे पहुंचनी त साचों देवर जी हमके छोड़ के जा चुकल रहलन। आंगन में उनके लाश पड़ल रहे।

हम दूबारा चूड़ी फोड़नी, दूबारा मांग के सिंदूर धोवनी, दूबारा सफेद साड़ी पहिरनी।

गांव घर में हमार बदनामी पसर गईल कि बड़ा भकसाहिन बिया। दू दू गो मरद के खा गईल। बाकिर हमरा जियरा के हाल केहू समझे वाला ना रहे। कुलछनी हल्ला हो गईल बाकिर हमरा बाल बच्चन के परवरिश कैसे होई, ई सोचे वाला केहू ना रहे।

एक दिन बिछौना झाड़त में एगो लिफाफा मिलल। जौना में देवर जी के हैंडराइटिंग में कुछ लिखल रहे – हम आपन मर्यादा ना भुलनी बाकिर तू भुल गईलू। हम अपने आप पर काबू रख लेहनी बाकिर तू ना र खलू। जौना बात के डरे हमार माई बाप हमार जिन्दगी बर्बाद कर दिहलस ऊ करम आखिर तू कर ही लेहलू। हम आपन जवानी, आपन प्यार, तोहरा खातिर सब कुछ कुर्बान कर देहनी लेकिन तू? तू का कईलू आपन अंतरात्मा से पूछिह।

हम तोहके नंगा करे के नइखी चाहत। काहे की हम तोहके बहिन मनले बानी। आ बहिन के नंगा होत कौनो भाई ना देख सके ला। तोहरा के बचा के हम चुप्पे से ई दुनिया छोड़ के जा रहल बानीं। ताकि तोहरा पर आ हमार परिवार के पवित्रता पर कौनो आंच ना आवे।

अब तोहरा के हम नसीहत करे लायक भी नईखी। ए लिए अब तोहरा जौन बुझाई तौन करिह, काहे की तू आजाद बाडू।

चिट्ठी पढ़ के हमरा आंख के सामने अन्हार हो गईल। सारा घर नाचे लागल आ हम धम्म से बिछौना पर गिर पड़लीं।

देवर जी हमसे छोट होके भी हमसे बड़ बन गईलन। एतना बड़ जेतना बड़ बनल आम आदमी के बस के ना होला। अब त हमरा सामने जान देवे के भी विकल्प नईखे। हमरा अब समझ में आइल कि देह इंसान के देहावसान के तरफ के तरे ले के जाला।

❑❑

❍पटना(बिहार)

■ दिलीप पैनाली

ललिता

संगीता के त करम ओही दिन फूट गइल जहिया उनुकर बेटी कमे उमिर में मुसमात हो गइली। तबो ऊ हार ना मनली आ बेटी का संगे दुनो नतिनियन के पेंशन का पइसा से परतिपाल करे लगली। एकरा बावजूदो ऊ मने मन कवनो दोआह लइको का फेर में रहली कि जदि मिल जाई बिधवा भइल ललिता के दुबारा बिआह कई देबि।

धीरे धीरे दिन बीते लागल।कुछ दिन बाद ललिता जेही सेही का घरे बरतन बासन करे लगली। काहे कि उनका माई का मिलत पइसा से घर चलावल कठिन होखे लागल रहे।ओही घड़ी केहू सलाह दिहल कि कवनो होटल में काहे नइखु काम ध लेत? ओजा पइसा त मिलबे करी निक–नोहर खाँहू के भेंटाई। तनिका कोशिश का बाद उनुका एगो होटल में काम मिल गइल।ई बात जगजाहिर बा कि कमजोर आ मजबूर महिला पर लोगन के निगाह कइसन रहेला?

ओही होटल में गणेश नाँव के एगो अधेड़ काम करत रहस। ऊ हरदम ललिता का परती हमदर्दी देखावस।कबो कबो ऊ ललिता का काम में हाथेपाथे लागियो जास। धीरे धीरे ललिता का मन में गणेश का परती परेम के बिया जामे लागल। देखते देखते ऊ अमोला से गाछ होखे का अवस्था में पहुँच गइल। गणेशो इहे चाहत रहलें।काम से सँवास मिलते दुनू आदमी बात बतकही में लाग जाय।

गणेश का बिषय में ललिता बेसी जानल उचित ना समझली । हँ अतना गणेश जरूर बतइले रहस की ऊ दोआह हवें।गणेशो का सहारा के जरूरत रहे आ ललिता त चाहत रहली कि केहू अइसन संघतिया मिल जाव जवन हमार जीवन पार लगा देव। बात बढ़त बढ़त अतना बढ़ गइल कि ललिता के गोर भारी हो गइल।अब ललिता गणेश से कहली कि चल मंदिर में बिआह कर लिहल जाव ना एह अवस्था में हमार जिअल मुश्किल हो जाई।गणेश अतना जल्दी बिआह करे का पक्ष में ना रहस। ऊ ललिता के डाक्टर लगे जाये के बात कहे लगलें। लेकिन एह ला राजी ना होखस। देखते देखते कुछ कहे सुने समझे समझावे में बीत गइल।गणेश रोज आशा देस कि जल्दिये बिआह कर लिआई आ करस ना। एकदिन ललिता उनके धमकी दे दिहली कि जदि परसो ले बिआह ना करब त हम दस गो लोग के बिटोरब।

अगिला दिन जब ललिता होटल में काम करे गइली त पता चलल कि गणेश रतिगरे भाग गइल बारन। अब ललिता का कटले खून ना! करस त का करस! गलती ना महापाप कर चुकल रहली। पेट पोषात जीव के का होई हे ईश्वर मने मने कह थहरा के बइठ गइली। होटल के मालिक तबियत खराब जान के ललिता के घरे भेज दिहलें। संकट का समय बिबेक कम काम करेला अउसहीं एहु बेचारी के बुद्धि काम कइल बंद कर दिहले रहे। अब ना ऊ ई बात केहू से बता सकत रहली ना छिपा सकत रहली काहे कि सातवा महिना चलत रहे।एकदिन ऊ मरहुँ के सोचली लेकिन हिम्मत जबाब दे दिहलस।

उपाय सोचते सोचते एकदिन प्रसव पीड़ा उपटल आ घरहीं एगो संतान के जनम दे दिहली। लोग पता चलते उनका मोहल्ला में पड़ल हल्ला, नकटेढ़ी काकी लाठी ठकठकावत पहुँचली उनका दुआरी आ लगली गरिआवे।केहू कहे एह कलमुँही के मुआ घाल स,केहू कहे जिअते गाड़ द स त केहू कहे टोला से निकाल द स। आ लोटन बहु करतुत करनिहार के पता पूछे लगली। अतने में ददन केनहु से पहुँचले आ सभे से कहले कि अबहीं ई सब छोड़ाव पहिले लइका आ लड़कोरी के डाक्टर से देखावल जाव। कवन पापी अइसन पाप कइले बा एकर बिचार बाद में कइल जाई।ओकरा बाद ललिता के सरकारी अस्पताल में पहुँचावल गइली।ऊ ना जिअत जस रहली ना मरल जस। कुछ दिन का हल्ला गुदर का बाद टोला शांत हो गइल।जब ललिता का आपन जिनगी भार बुझाये लागल त ऊ आ एकदिन आपन इहलीला समाप्त कर लिहली। ऊ इहे गोहरावत गइल होइहें कि आउर केहू ललिता केहू गणेश का फंदा में मति फँसो।

❍ सैखोवाघाट असम

परदेसिया

जनकदेव जनक

बड़ होखल आछा हटे, बाकिर बड़प्पन ओकरों से आछा हटे । ई बात हम एह से कहत बानी कि अदना सा नाच गान करे वाला एगो नचनिया जवन हमनी 10 आदमी के साथे आपन बड़प्पन छोड़ गइल, ओकर एहसान आज तक हमनी उतार ना सकनी सं।

रात के नौ बजत रहे। हमनी बिना खइले पीअले गरखा से अपना गांवे सारन खातिर लवटत रही सन। काहे कि जवना लइका के छेका देवे गइल रहीं सन, ओह लइका के माई दहेज लेवे खातिर सुरसा लेखा लम्हर मुंह बवले रहे। जेकर भरपाई हमनी के बस के बात ना रहे। समुझावला के बादो बात ना बनल।

एगो त माघ के हाड़ गलावत जाड़ा के रात, ओकरा ऊपर पानी लेखा बहत पछुआ बेयार, जवन सूई के नोंक नियर देह में चुभत रहे। जीप में बइठल लोग गरम कपड़ा से आपन नाक,कान आ मुंह झपले रहे, ताकि हाड़ कंपावत बरफ लेखा बहत हवा के असर देह पर ना हो सको। अन्हरिया के चीरत हमनी के जीप तेजी से भागत रहे। ओही टाइम जीप के तेज लाइट में सामने से आवत एगो साइकिल सवार लउकल, जवन तेज लाइट में उ चकमका के सड़क के किनारे डगमगाते गिर पड़ल। बाकिर उ तुरंते अप. ना के संभरलस आ सड़क किनारे खड़ा होके उ जीप में बइठल लोग के निहारे लागल। जब जीप ओकरा आगे से निकलल त एकाएक उ जोर से चिल्लाईल,

"...ए हीरा भाई ...गाड़ी रोकी...गाड़ी रोकी।

अचानक ड्राइवर जीप रोक दिहलस। जीप में बइठल सभे लोग ओह आदमी के देखे लागल।जब उ जीप के लगे आइल त सबके मुंह से एकाएक निकलल, ''आरे परदेसिया तूं...का बात बाटे ... आज कवनों साटा पर नाचे आइल बाड़अ का....?"

सच कहल बाटे कि नचनिया बजनिया के तीरे नजर अचूक होला। उ उड़त चिरई के पाख गिने वाला होलेंन। नाच देखेवालन के भीड़ में केकर पाकिट कातना भारी बाटे, ओकरा के बिना टटोलले, तिरछी नजर मार के ओकर सारा नोट हथिया लेलेंन। नचनिया बजनिया के जेतना गांव जवार के इतिहास भूगोल के बेसिक जानकारी होला, ओतना केहूं के ना।

21 साल के छोकरा परदेसिया के आंखि के जोत बड़ा तेज रहे।बिल्कुल तिरंजबाज अरजुन खानी। कुहा वाला अन्हरिया रात में जहां कुछो ना लउकत रहे, ओहिजा परदेसिया माथा में मोफलर बंधले हीरा सिंह के पहिचान लिहलस।

परदेसिया लौंडा नाच के कलाकार रहे। जवन हमनी के जनता बाजार पर अपना मंडली के साथे रहत रहे। बाजार पर ओकरा से अक्सरहा भेंट हो जात रहे, उ हमनी के उ चिन्ह लिहलस।

बदलत जमाना में लौंडा नाच हासिया पर चल गइल बाटे। जवन कबही सामंति परंपरा में रंडी नाच के समानांतर रहे। जहां रंडी नाच मुट्ठी भर लोगन के मन बहलावे के साधन रहे , ओहिजा लौंडा नाच सरभहरा वर्ग के मनोरंजन के प्रतिनिधि ात्व करे। अइसन नाच के सिरमौर भिखारी ठाकुर, रसुल मियां, रामचंदर मांझी जइसन कलाकार रहस। हालही में देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद लौंडा नाच के कलाकार 94 वर्षीय रामचंदर मांझी के पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित करके एह कला के जीवंतता प्रदान कइनी ह। खैर, परदेसिया हमनी के खाना खिलावे खातिर पाछा पड़ल रहे। उ कहलस, "बात कुछो नइखे मलिकार। रउरा सभे हमार असामी हई। हमरा घर के पास आइल बानी। इहां से बिना खइले पिअले एह रात में कइसे आगे बढ़ जाइब। अब जीप हमरा घरे जाई।" मुसकात परदेसिया जीप में बइठल सबके चेहरा पर डीठ गड़ा के तकलस.

"ए परदेसी, जीप से गावें जाए में जादा से जादा एक घंटा लागी। तोहरा के एह सुनसान जगे में देखके हमनी के पेट अइसही भर गइल। अब आगे बढ़े दअ, जाड़ा पाला के रात बाटे." हीरा सिंह ओकरा से पाछा छोड़ावत कहनी।

"एही से त कहत बानी कि कुछ खाके पी के आगे बढ़ी सभे।" अतना बोल के ऊ जीप के सोझा खड़ा हो गइल, ताकि जीप आगे मत बढ़ सको।

"ना मनब त ए परदेसी भाई, आगा खोरीपाकड़ बाजार बाटे, ओही जा हमनी के गरम गरम चाह पिआ दी ह।" जीप ड्राइवर धरम संकट दूर करे खातिर आपन बात रखलस।

सभे लोग ड्राइवर के बात पर हामी भरल आ परदेसिया के साइकिल जीप पर लदा गईल। उहां से जीप सीधे बाजार के तरफ रवाना भइल। एही बीचे परदेसिया पूछलस," गरखा में केकरा किंहां छेका देवे गइल रहीं सभे? ''

"आरे भाई, बाबू बलदेव सिंह के पुत्र विनय से शादी ठीक भइल रलअ! जब छेका लेके उनका घरे चहुंपनी ह सं त दिन के तीन बजत रहे। हमरा गांव सारन से गरखा तकरीबन 120 किलो मीटर दूर बाटे। अतना दूर जाये खातिर एगो भाड़ा पर जीप गाड़ी ठीक कइल गइल रहे।

जीप में शिवनाथ भइया, शिव नारायण प्रसाद, राम बिलास भाई, हीरा सिंह, सुभास भाई, बिंदा लाला आदि दस लोग सवार रहे। शादी के अगुआ हरपुर कराह के रामदुलार भाई रहलें। बेटहा से तय रहे कि चार बजे सांझ खानी लइका के छेकाछुकी कके हमनी वापस लवट जाइबसं। जलखई के बाद हमनी के अगुआ से छेका के रस्म पूरा करे खातिर निहोरा कइनी सं. ओकरा बाद रामदुलार भाई हमनी के बात बेटहा से रखलें।

ओने से जवाब मिलल कि लेनदेन जबन तय रहे, ओहपर अब शादी बिआह ना होई। लेन देन पर फेरू से चरचा लइकी के बाप से होई, ओकरा बादे छेका के बात आगे बढ़ी।

ई बात सुनते हमारा साथे गइल लोग के देह में आग लाग गइल, सब लोग लइका के दलान पर जाके बइठ गईल। ओकरा बाद से बतकुचन शुरू भइल, बाकिर दहेज लोभियन से बात ना बनल।

''खैर, जवन भईल तवन निमने भईल। एही बहाने रउरा लोग के सेवा टहल करे के मउका त मिलल।'' परदेसिया कहलस।

गंवई सड़क कच्चा रहे। ओह सड़क पर जहां तहां गढ़हा गुरूहीं भरल रहे। ढकचा मारत जीप आगे बढ़त रहे। अचके जीप में जोरदार आवाज भईल आ कुछ दुर जाके जीप रूक गइल। ड्राइवर जीप से उतरके नीचे सेजांच करे लागल. ओकरा बाद कहलस कि समझ में नइखे आवत कि जीप में का भईल बाटे. पीछे से जीप ठेली सभे, कतहीं चालू हो जाव।

जीप में बइठल लोग नीचे उतरके जीप ठेले लागल। कुछ देर ठेलला पर जीप खरखरा के रह जाव, चालू ना होखे। अइसही लोग ठेले आ हाफे। सभकर कपड़ा के गत बन गईल रहे। एह तरह से कातना बार भईल, बाकिर जीप चालू ना भईल.

तब परदेसिया कहलस कि हम मिस्त्री बुलाके लावत बानी।

ड्राइर भा हमनी कुछो कहतीं, एकरा पहिले उ साइकिल दनदनावत निकल गईल। ठीक बीस मिनट बाद, एगो मोटर साइकिल आइल, जेपर से एगो मिस्त्री आ परदेसिया उतरल।

मिस्त्री आपन औजार लेके जीप के ड्राइवर सीट पर बइठल। पहिले जीप चालू कइलस। जब जीप चालू ना भइल त स्टार्टर बौक्स खोल के देखे लागल। बहुते माथापच्ची के बादो जीप चालू ना भइल, तब मिस्त्री बोलल कि जीप टोचन करके गैरेज ले चले के पड़ी।

सभे कपारे हाथ ध के बइठ गईल। केहू के कुछो समझ में ना आवे। सभे मनेमन परदेसिया के कोसे लागल कि कावना साईत में ओकरा से भेंट भईल ह। ओकर अंगछ बड़ा बाउर बाटे, लागत बाटे कि ओकरा साथे जीप में कवनो भूत लाग गईल होखो।

परदेसिया रात के 11 बजे एगो ट्रेक्टर लेके आईल। जीप टोचन करके गैरेज गईल। गैरेज के पास राखल कार्टुन पर जरल मोबिल डालके घुर फुंकाईल। सभे आग तापे लागल। आग के धाह पाके सभकर देह टनटना गईल।

लोग आपन आपन देह हाथ सीधा करे लागल। परदेसिया चाह वाला के कान में कुछो खुसुरफुसुर समुझवलस। थोड़का देर में दसों आदमी के सोझा थरिया में दाल, रोटी, सब्जी आइल। बाद में गरम गरम चाहो आ गईल। सभे ओकर लुफ्त उठवलस। कहल गईल बा कि "दाने दाने पर है खाने वाले का नाम।"

हमनी के जहां खाये खातिर गईल रहींसं, उहां भोजन नसीब ना भइल। जहां पानी पिये के उमेद ना रहे, उहां रोटी भेंटा गईल।

खापी के सभी लोग डकार आ जंभाई लेत गैरेज के ओर रूख कइलस। ओही टाईम मिस्त्री जीप बनाके ट्रायल करत रहे। जीप तेजी से लेके गईल आ तुरंते घुमा के गैरेज ले आइल। ड्राइवर से कहलस, ''जीप चला के देख ल भाई। ''

ओकरा बाद हमनी के ड्राइवरो जीप चला के देख लेलस। अब सब कुछ ठीक रहे। हम गैरेज मिस्त्री से पूछनी, "भाई, राउरा सहयोग आ मेहनत के हमनी कायल बानी. जीप ठीक हो गइल. राउर मेहनताना केतना भईल.? "

"तेरह स रुपिया।'' गैरेज मिस्त्री के मुंह से निकलल। ओकरा बाद हम मनी बैग से रुपिया निकालके देवे लगनी । ओइसही मिस्त्री बोल पड़ल,

''एकर चिंता फिकिर जन करीं, मेहनताना मिल गईल बाटे।"

"पइसा के देलस हअ?"

"परदेशी ।"

"आरे, ई त बड़ा गड़बड़ भईल?"

"ए परदेसी केने बाड़अ हो ? जल्दी आव।"

आवाज सुनके परदेसी अइलें । हमरा सवाल करे से पहिलही अपना तेवर दिखा दिहलें। उ कहे लगलें,

"रात के 12 बजत बाटे, कुबेरा घर जाये के ई कवनो टाईम हटे। दलानी में रउरा सभे के सुते खातिर बिछावन तइयार बाटे। आराम कईल जाव। चार बजे भोर में रउरा सभे निकल जाईब, बाकिर एह टाईम ब्रह्मभमो आ जइहेंन त हम ना जाये देब।"

''ई त बात ठीक बा। बाकिर हई तेरह स रूपिया पकड़ ली। ''हम जबरन नोट उनुका पाकिट में ठूंस दिहनी।

बाकिर परदेसी भावुक हो गइलें। उ भावुकता में हमार हाथ पकड़ लिहलें। अपना पाकिट से रुपिया निकाल के धरावत कहलें,

''मलिकार, रउआ सभे त हरमेशा हमरा नाच मंडली के रक्छा कइले बानी, ना त मंडली के तीस लोगन के खर्चा उठावल हमरा कुबत के बाहर बाटे। रउआ सभे के नेहछोह के गठरी हमरा झोरी में जेतना पड़ल बाटे, ओकर नेकी सात जन्म में ना उतरसकी। हई आपन अमानत संभारी आ हमरा सरधा के अरथी जन उतारी।''

❑❑

❍ लिलोरीपथरा सब्जी बगान, झरिया–828111, धनबाद, झारखंड

मीनाधर पाठक

मेहरारू लोग के दिन

"बाबूजी बड़ी देखि सुन के भरल–पुरल घर में बिअहले रहलें कि हमार बबुनिया सुख से रही, बाकिर भागि के लेखा कि छौ भाइन में बर–बँटवारा के बाद जवन खेती–पाती मिलल, ओसे गुजर–बसर भर हो जाउ, ऊहे ढेर! महतारी की कोखि से का जाने कवन भागि ले के जनमल रहनीं हम।" बुधिया खेते की मेंड़ पर बइठि के घास छोलत मनेमन अपनी भागि के कोसत रहे।

"अरी बुधिया!"

सुनि के चिहुक गइल ऊ। हाथ रुकि गइल। घूमि के देखलस त सरकारी स्कूल के मैडम जी रहली। बुधिया के हाथ खुरपी छोड़ि के अभिवा. दन में जुड़ि गइल आ मन के विषाद झरि के ओ. करी ओठे पर मुस्कान आ गइल। बाकिर आजु उनके देखि के ओकर आँखि चकचोन्हिया गइल।

रोजे छुट्टी के बाद एही ओर से मैडम जी अपनी गाँवे जाली आ कब्बो कब्बो दूनू लोग से भेंट हो जाला। तनी बोल–बतिया के ऊ आगे बढ़ि जाली आ उनसे आपन कहि सुनि के बुधियो के मन हल्लुक हो जाला। आजुओ ऊहे भइल। स्कूल से लौटत बेरिया ऊ बुधिया से भेंटा गइली। बाकिर बुधिया देखत रहे कि मैडम जी रोज की तरे आजु कुम्हिलायिल ना रहली। आजु त उनकर मुखमण्डल अढ़हुल जइसन फुलायिल रहे। साड़ियो टनटन रहे, रोज की तरे लुजुर–पुजुर ना रहे। मूड़ी के बार एकदम करिया। लिलारे पर साड़िये के रंग के टिकुली आ ओठवा तनी लाल रहे। उनकी कान्हे पर बेग आ हाथे में काँपी–किताब चाहें छाता त रोजे दे खत रहे ऊ बाकिर आजु उनकी हाथे में झोंपा भर रंग–बेरंग के फूल रहे। ईहेकुल देखि के ओकर अँखि चकचोन्हिआयिल रहे।

"ई एतना फूल कहाँ मीलि गइल रउआ के! आजु कुच्छु ह का जी?" बुधिया उनके ऊपर से नीचे ले देखि के अचरज से पूछलस।

"हँ, आजु हमनी के सम्मान भइल ह।" मैडम जी मुस्किया के कहत रुकि गइली, काहें से कि मेड़वे पर बुधिया ठाड़ रहे, ऊ आगे जइती कइसे।

"का ह आजु?" बुधिया के अचरज कम ना भइल, बलुक बढ़ि गइल।

"आजु नाहीं, बिहने ह, महिला दिवस। बाकिर इतवार छुट्टी के दिन ह, एसे इस्कूल में आजुए कार्यक्रम भइल ह।"

"ई का होला जी!" उनके एक टक्क ताकत कहलस ऊ। आखिर मन के अबूझपन ओकरी ओठे पर आ गइल रहे।

"मेहरारू लोग के दिन। अब बुझाईल!"

"हे भगवान् जी! ई मरद मेहरारू के दिन कबसे बँटा गइल हे! ई त हम पहिली बेर सुनतानी।" अचरज से बुधिया के आँखि बड़हन हो गइल रहे।

"क बेर त कहनी हम कि दू अक्षर पढ़ लिहल करु हमसेय पर गाय–गोरू, घास–गोबर में अझुराइल रहेले।" मैडम जी तनी खिसिया के कहली।

"आ जाए दीं। का करे के बा पढ़ि के! एहिंगा मरि के माटी में मिल जाए के बा।"

"भगेलू ब रोज छुट्टी के बाद आ के पढ़ि जाले। ओकरा के पढ़ि के का करेके बा! ऊहो त ईहे सब करेले न! बाकिर अब रुपया पैसा गीनेले। अपनी नाती के किताब अक्षर मिला–मिला के कथा–कहानी पढ़ेले। आजु स्कूल में ओकरो सम्मान भइल ह। बाकिर ई सब तोसे कहला से कवनो फायदा नइखे।" अबकी बेर मैडम जी के तियुरी तनी चढ़ि गइल रहे। एक बेर बुधिया उनसे बतवले रहे कि "ऊ दू में पढ़त रहे तब ओकर माई मरि गइल आ साल भीतरे बाबूजी के दूसर बियाह हो गइल। मैभा अयिली त ओकर स्कूल छोड़ा के घर के काम में लगा दिहली। ओकरी बाद से किताब–काँपी से भेंट ना भइल। घर के काम आ भाई बहिन के देखभाल करते करत ऊ बियहि के ये घरे आ गइल।" जबसे मैडम जी ई सुनली, तबसे ऊ बुधिया से कहत रहली कि समय निकाल के इस्कूले आ जाइल करे आ उनसे पढ़ि लिहल करे, बाकिर बुधिया उनकी बाति की ओर ध्यान ना देत रहे। ऊहे आजु मैडम जी रिसियात रहली।

बुधिया ई सब सूनि के सनाका खा गइल रहे। अकबकाइल मैडमजी के ताकत रहे। ओकरा के एंगा अपनी ओर देखत देखि के मैडम जी के तियुरी ढील भइल।

"त का आजु सब मेहरुन के समान होला?" बुधिया नासमझी के बोझा तरे दबाइल पूछि लिहलस।

"हँ बुधिया! सब मेहरारू लोग के सम्मान के दिन ह आजु।"

"अच्छा...! हमरो जइसन के?" आँखि पसारि के पूछलस बुधिया।

"हँ, काहें ना! केहू से कम है का तूँ? खेत खरिहान, घर–दुआर केतना काम करेले! आ तोर हाथ के बीनल डलिया, मउनी त केतना सुन्दर होला। मूज रंग के केतना सुन्दर–सुन्दर बेल बूटा, फूल–पत्ती बनावेले ओपर! जानबो करेले कि ई सब के शहर में केतना मोल बा!" मैडम जी अपनी बोली में मिठास घोरले कहली।

जिनगी में पहिली बेर आपन एतना बड़ाई सुनि के बुधिया के साँवर सूरति पर सेनुर जइसन लालिमा पसरि गइल रहे। ओकरा बिसवास ना होत रहे कि ऊ एतना गुनगर हो सकेले। बाकिर मैडम जी कहताड़ी त साँचें होई। अबहिन मन में खुशी बुलबुलाते रहे कि मैडम जी अपनी हाथे में लिहल पुष्पगुच्छ ओकरी ओर बढ़ा दिहली।

"ई का जी! ई त राउर समान ह न !" आपन दूनो हाथ अपनी गाले लगा के दू डेग पाछे हटत बुधिया कहलस।

"ले थाम, ई हमरी ओर से तोर समान नाहीं, सम्मान ह। बुझले?" हँसि के मैडम जी गुलदस्ता बुधिया की हाथे पकड़ा दिहली।

खुरपी, हँसुआ, कुदारी जइसन लोहा के खेतिहर औजार थामे वाला हाथ में जइसहीं फूल आइल, बुधिया के बुझाइल कि ओकरी चारू ओर रंग–रंग के फूल फुलाइल बा, आ ऊ तितली जइसन मंडरात बिया। हवा में सुगंध घूलि गइल बा आ ओकर देहिं महक उठल बा।

"अच्छा छोड़ुय अब तें बताउ, अपनी मरद से काहें ना कहेले कि कुच्छु काम धाम ऊहो क लिहल करें। हम जब देखेनी तब तेहीं घास काटत देखाले।"

बुधिया मैडम जी के बाति सुनि के एके झटके खेते की मेड़ पर आ गइल।

"हुंह! ऊ पी के ढिमिलाइल होइहें कहीं। दूगो बैल बाड़ेंसन दुआरे पर, जे ऊहो उनकी भरोसे हम छोड़ दीं, त दू जून के रोटियो ना मिली आ भूख पियासि से बैलो मरि जइहेंसन।" मरद के नाँव सुनते ओकरी देहिं से महक कहीं ऊड़ि गइल रहे आ सराब बस्साए लागल रहे।

"देखु बुधिया ! पीठ पाछे नाहीं, मरदे के मुँह पर बोलल सीखु।आपन बाति कहल सीखु। एने ओने घूमल करेलें खेलावन। कहु, कि घर के काम में हाथ बटावें।"

"जे घर के कार करिहें त उनकर इज्जति ना घटि जाई! मरद कहीं घर के कार करेलें!" कहि

उठा लिहलस आ खच्च खच्च खच्च! अपनी मन के सब कोप ओही दूभी पर उतारे लागल। मैडम जी जानि गइली की मरदे की नाँव से बुधिया के बीखि चढ़ गइल रहे।

"काल्हि के दिन तोर ह, जनले। तोके जवन नीक लागे ऊ करिहे।" कहि के मैडम जी मेड़ से तनी खेते में उतरि के ओकरी पाछे से निकल गइली। समनवे उनके गाँव देखात रहे। आजु बुधिया से बतिअवला में उनके देरी हो गइल रहे।

उनकी गइला के बाद बुधिया सोचे लागलि, "त का हम बिहाने अपनी मन के सब क सकेनी!" ओकरा के बुझाइल कि दसहरा, दीया–दियारी आ फगुआ जयिसने ईहो कवनो तिउहार ह बाकिर अबले त हम ना सुनले रहनी ए तिउहार के बारे में!

"अरे! त अब सुनि लिहले न !" जइसे ओकरी भीतर से केहू कहल। बुधिया के मन के रीसि धीरे–धीरे उतरे लागल।

"भागल भूत के लंगोटिए सही। कम से कम जिनगी के एगो दिन त अपनी मन मोताबिक जीए खातिर मिलल! एतने ढेर बा।" इहे सोचत ओकर खुरपी तेज हो गइल रहे।

आजु के साँझि कुच्छु अलगे रहे। बुधिया के मन खुश रहे त खेलावन के कोसल–गरिआवल छोड़ि के ऊ आपन मन पसंद गीति गावत छाँटी काटत रहे। आजु ओकरी मन में सावन हरिआ आइल। जा के नादे में हरिअरी मिला दिहलस। भीतर आ के हाथ गोड़ धो के चूल्हि से राखी निकालि के लीपि पोंति के रसोई में जुटि गइल। ओकरा बुझात रहे कि केतना जल्दी आजु के दिन बीते आ बिहान होखे।

बगयिचा से जवन सूखल पतई बीनि के ले आइल रहे ओही से आगी जरा के रसोई बनवलस आ बहरा जा के खेलावन के खाए खातिर कहि अइलस। जल्दी से अंगना में पीढ़ा ध के एक लोटा पानी ध दिहलस। आ रसोई परोसे लागलि। खेलावन बहरा से आ के पीढ़ा पर बइठलें तबले बुधिया परोसल थरिया खेलावन की आगे ध दिहलस।

"इ रोज–रोज का घास पात परोस देले रे! हमार पेट त देखिये के भरि गइल। तेहिं खो इ कुल। हमरी गंटई से ना सरकी।" थरिया में साग रोटी देखि के खेलावन थरिया सरका के ऊठि गइलन।

छने भर में बुधिया के खुशी धुआँ हो गइल। अब त रीसि के मारे ओकरी देहीं आगि लाग गइल।

"अरे त काहें ना जा के तरकारी भाजी ले आवे ला! 'घर में नाहीं आटा आ अम्मा भुजावें लाटा' एतना खाए–पिए के सउक बा, त जा के कुच्छु काम–धाम करे के चाहीं नू ! जब दू पइसा हमरी हाथे धरता तब देखवता ई रोआब ! दिना भर एहँर ओहँर घूमि के हमके इ गरमी मति देखावा। खाए पीए आ सुत्ते खातिर हम मेहरारू, ओकरी बाद जिनावरो ले बढ़ि के गति हो जाला।" बुधिया रिसी में आपन खून सु खावत रहे बाकिर आज ओकर दिन निक रहे कि एतना सुनले के बादो खेलावन चुपचाप बहरा निकल गइल रहलन।

खेलावन त पहिलहीं अपनी सँघतिया बेचन के साथे खा–पी के आइल रहलन। ऊ त सोचलन कि तनीमनी मुँह जुठिया लेब त बुधिया कुच्छु जानि नाहीं पायी बाकिर कहँवा ऊ मुर्गा के टंगरी आ कहँवा ई साग रोटी! ऊ जा के अपनी खटिया पर पसर के सुति गइलन। बिखिआयिल बुधिया सब खैका बैलवन की आगे डारि के लोटाभर पानी गँटई के नीचे उतार लिहलस, आ जा के अपनी बँसहरी पर सुत्ति रहल।

पेड़ पालो पर बयिठल चिरई–चुरगुन आपन पाँखि पसारि–पसारि अँगरियात रहे। घर के पाछे पोखरा में जलमुर्गी अपने राग आलापत रहल. ीसन। गाँव की गली से ले के खेतन की मेड़ ले पदचाप गूँज उठल रहे। राति अपनी अंतिम पहर में वाचाल भइल रहे। बुधियो उठि के पहिले बैलन लगे धुँआरा कइलस आ झाड़ू बहारू क के नाँद में छाँटी लगा दिहलस। जवन थोर ढेर खेत बचल रहे ओपर एही कुल की भरोसे कुच्छु अनाज हो जात रहे। बैलन के खोलि के नादे पर बान्हि दिहलस बुधिया आ गोबर बटोरि के गोहरउरी में फेंकि के बारी की ओर निकलि गइल।

उजियार होत रहे बाकिर अबहिन ले खेलावन के ओंघी ना खुलल रहे। "ऊठीं न हे!" लवटि के खेलावन के जगावत बुधिया भीतर चलि गइल। राति के सब बाति भुला के आगे बढ़ल ओकर रोज के कार रहे। नहा धो के घर के देबी–देवता पुजले के बाद बुधिया हँड़िया पतुकी टोवे लागल। एगो पतुकी में भेली मिल गइल आ दूसरकी में महकुआ चाउर। चउरा के फटकि बीनि के फूले खातिर भें दिहलस बुधिया आ भेली लोढ़ा से कूटि के लोटा की पानी में डाल दिहलस। तबले खेलावनो नहा धो के गमछा पहिनले अँगना में आ गइलन आ रेंगनी से बंडी उतार के पहिने लगलन।

"जा के बजारे से कवनो नीमन तियना तरकारी ले आयीं। आ तनी जल्दी आ जायिब।" बुधिया अपनी अँचरा के खूँट खोल के एगो गुड़मुड़ियाइल नोट निकाल के खेलावन की ओर

बढ़ा के कहलस।
"आजु केहू आवता का रे! कि कवनों तीज तियुहार ह!" रुपया लेत पुछ्लन ऊ।
"नाहीं त! केहू नइखे आवत।"
सुनि के खेलावन सोचत रहलन कि " बुझाता कि काल्हि हम खइले बिना सुत्ति गइनी एहिसे आजु आपन गाँठि खोलले बिया।" ऊ मोछिए में मुस्किअयिलन।
"आजु हम घासि खातिर नाहीं जाएब। रउरे जाए के बा।" बुधिया अँचरा खोंसत कहलस।
"हम काहें जाएब घासि खातिर? तें का करबे ?" भृकुटी तना गइल खेलावन के।
"आरे आजु मेहरारू लोग के दिन ह नू!" उछाह में ओ. करी मुँह से निकलि गइल।

ओकर जीउ हक्क दे हो गइल। फेरु ऊ मन में सोचे लागल कि "अब का करीं! निकलि गइल त निकलि गइल। ए आदमी से कवनो आस त बा ना। कम से कम एही बहाने एक दिन के छुट्टी त मिल जाई। केतना दिन से चोरऊँध एगो पचास के नोट ध इइले रहनी। ऊहो आजु निकल गइल। पेट ककोरता बाकिर का केरे के बा! अबकी बेर फसल ठीक भइल बा। आँखि बचा के अनाज बेच लेब त हो जाई। अनेरे ना नु एतना जाँगर जोतले रहेनी! ई कुल ना करीं त आँखि देखे भर के पइसा रुपया ना रहे देला ई आदमी। हाथ पर तनी कुच्छु रहेला त बूत बनल रहेला। नाहीं त रोजे कब्बो चना मटर, त कब्बो बथुआ मरसा त कब्बो चौराई पोइ! जवन मिल जाला खेते मेड़े से लेआ के धो बना लेनी बाकिर आपन गाँठि ना खोलनी। काहें से कि गाहे– बगाहे कवनो आकाज हो जाला त ई आदमी थयिली झारि के देखा देला। नेवता–हँकारी पानी उतर जा, जे चार पइसा ना रहे हमरी लगे त!" सोचते सोचत जा के ऊ दियरखा से ककही उठा के आपन बार झारे लागल। चोटी पूरि के सीसा के गर्दा अँचरा से पोंछि के मुँह देखलस। सीसा देखले ओकरा केतना दिन भ गइल रहे। टिकुली साटि के फेरू से अपना के निहरलस, आ सीसा ध के चूल्हि लगे आ के बइठि गइल। खेलावन कनखी से सब दे खत रहलन।
"पहिले पानी दे हमके।" पैजामा चढ़ावत कहलें बाकिर मन में सोचत रहलें कि "ससुर ई मेहरारुन के दिन कबसे होखे लागल!"

बुधिया जल्दी से उठि के लोटाभर पानी खेलावन के थमा दिहलस। ऊ पानी पियलन आ लोटा बुधिया के थमा के रेंगनी पर से झोरा खींचि के निकल गइलन।

खेलावन के जाते ऊ गोंयिठा आ पतई लगा के चुल्हि बरलस। तसली में मीठा के रस छानि के चढ़ा दिहलस। तनिये देर में रस खदके लागल तबले चउरो पसा के ओही रसे में डालि दिहलस। चूल्हि में पतई चट्ट चट्ट जरत रहे। पतई के जरत देखि के बुधिया के बुझाइल कि ऊहो त एही तरे जिनगी भर जरते रहि गइल। मरदे के पियला से ऊ कहीं के ना रहि गइल रहे। ओकरा मन परे लागल कि कइसे पाँच बरिस के बेटा मंगरुआ खों खत–खोंखत परलोक सिधार गइल बाकिर पियला की आगे ई मरद लइका के सुधि ना लिहलन। जेतना बेर रुपया ले के गइलन, पी अइलनय आ कहि दिहलन कि बैद जी कहलें हँ, "आदी, तुलसी, पीपर आ मरीचि के काढ़ा बना के पिआ द। खोंखी ठीक हो जाई।" ऊ काढ़ा पिआवते रहि गइल आ एक दिन अपनी खोंखी के साथे मंगरुओ चुपा गइल। सोचते सोचत आँखी से लोर चू गइल। बेटा खातिर ओकर करेजा फाटे लागल।
"जिनावर कहीं के!" एकदम से ओकरी मूँहे से निकल गइल।

तब्बे कुच्छू महकल। चिहुकि गइल बुधि ाया। देखलस कि चूल्हि पर रसिआव फफा–फफा के जरि गइल रहे आ तसली से धुआँ उठत रहे। झट दे तसली उतारि के नीचे ध दिहलस बाकिर छने भर में ओकर अँगुरी लेसा गइल रहे। अँगुरी के साथे ओकर करेजो लेसाइल रहे। आँखिन से झर–झर लोर बहे लागल। ऊ हाथ पानी में बोरि के सुसुके लागल। चूल्हि में गोइठा की राखी के भीतर अब्बो आगी दहकत रहे। कुच्छु पतई जरि के भहरा गइल रहे त कुच्छु जरला के बादो आपन आकार ना तजले रहे।

दिन चढ़त जात रहे। आलू कूँचि के बुधि ाया अपनी अँगुरी पर छापि लिहले रहे। ओसे तनी आराम त मिलल रहे बाकिर आत्मा पर ऊ का छापे! कवन मलहम लगावे कि ऊहो जुड़ा जाउ!
खेलावन के देखत देखत हारि गइल त ऊठि के काल्हि के काटल छाँटी बैलन के आगे डालि दिहलस आ सोचे लागल कि "अब साँझि के मेंलवनी का दिआई एकनी के? ऊ आदमी त अबले ना आइल!"
खरामे–खरामे दुपहरिया घुसुकत जात रहे। बुधिया के कुच्छू बुझाते ना रहे कि का करे ऊ? अँगुरी में आगि फेकले रहे। केवाड़ी बंद क के सिकड़ि चढ़ा दिहलस आ खाँची, बोरी, खुरपी ले के बगयिचा की ओर चल दिहलस। रीसि में दुख बेयाधि भुला जाला आ का जाने कहँवा से हनुमंत के बल आ जाला। पहिले पतई बिनलस आ बोरी में भरि के बोरी पेड़े से लगा के ठाड़ क दिहलस। ओकरी

के बगयिचा के ओ पार खेते की ओर जा के घासि गढ़े लागल। अब ना त ओकर अँगुरी दुखात रहे ना मन में कवनो उछाह बचल रहे।

साँझि होत रहे। ओकर खाँची भरि गइल रहे। खुरपी घाँसी से तोपि के खाँची लिहले ऊ बगयिचा में आ गइल आ एक हाथे पतई के बोरी घिसिआवत, भुनभुनात घरे ओर चल दिहलस। "हमरी जिनगी में एक्को दिन सुख चौन के नइखे। आगि लागो एह जिनगी में!"

घरे पहुँचि के फेरू से ऊहे सब कार! दूभि झारल, छाँटी काटल आ फेरू से चूल्ही लगे बइठि के सोचल कि का बनायीं आ का ना बनायीं! भूखि से पेट कुलबुलात रहे। बिहाने से मुँहे एगो दाना ना गइल रहे। एक लोटा पानी हरहरा के पी लिहलस। तनी जीउ में जीउ आइल त बहरा आ के खेलावन के राहि ताके लागल। ओसारा में बइठल–बइठल अन्हार होखे लागल रहे।

"ई आदमी हमार जिनगी हेवान क के छोड़ दिहले बा!" सोचते रहे कि झोरा लटकवले खेलावन आवत देखा गइलन। बुधिया ठाड़ हो गइल। जैसे खेलावन ओसारा में गोड़ धयिलें, ओकरी नाके जोर से भभक लागल। बीखि कपारे ले चढ़ि गइल।

"आजुओ ढकोरि अइला? एक दिन पिअला बेगर ना रहि सकेला? तरकारी खातिर रुपया दिहले रहनी हँ। ऊहो पी लिहला? हमार त भागिए फूटल रहे कि तोहरा अइसन मरद मिलल! एसे नीक त बाबूजी हमके कवनो नदी नहर में धकेल दिहले रहितें। ई कुल बिपति त ना भोगतीं हम !" बिखियात बुधिया खेलावन की हाथे से झोरा झटक के छिनलस आ भीतर जाए लागल।

खेलावन के सब नासा उतरि गइल रहे आ भीतर के मरद हउहा उठल रहे। लपकि के बुधिया के झोंटा से पकड़लन आ खींचत अँगना में ले जाए लगलन।

"रुक ससुरी! तोर ढेर मुँह चलता। कल्हिए से ढेर फड़फड़ाताड़े तें। ले, हम तोर दिन बना देतानी। ले, हई ले!"

अँगना के आवाज दुआरे ले सुनात रहे आ मेहरारुन के दिन, राति के चादर में लुका गइल रहे।

❑❑

❍ कानपुर,30प्र0

माटी के पूत

राजकुमार सिंह

रामनाथ परमार अपना गांव के पुरानका धनिकहा रहले. बाकिर समाज में उनुकर बढ़िया छवि ना रहे. गरीब गुरूबा के सतावे में उनका बड़ा आनंद आवे. उनुका मन में लालच कुटकुट के भरल रहे. ऊ हमेशा पराया माल आपन समझस. इहे कारण रहे कि अपना मेहरारू पर धियान ना देस. एगो बेटा के जन्म देला के बाद उनुकर मेहरारूल उमिर के तिसरका पड़ाव में सरग सिधार गइली.ओकरा बाद से फेरू दोसर बिआह ना कर सकलें, ताकि उ अपना दुलरूआ बेटा के सौतेली माई के डाह, घृणा आ कोध से बचा सकस. बाकिर बिना मेहरारू के उनुकर घर दुआर सरकारी चरवाहा विद्यालय नियर हो गइल रहे. केहूं तरे बेटा मुरारी के लिखा पढ़ा के गरेजुएट बनवलें.

अब राम नाथ चाहत रहलें कि बेटा के फौज में नोकरी हो जाइत त उनुकर दुख दूर हो जाइत. मुरारी के शादी– बिआह में भरपूर दहेज मिलीत. ऐसो आराम से बुढापा कट जाइत. ए से बेटा के कतहीं गलत राह पर ना चल जाव, ओकरा अचार –बेवहार पर पूरा खियाल राखस. मुरारी अपना हमउमिर संघंतियन के साथे खेले खातिर निकल जाव त ऊ दिन भर ओकर चरवाही करस. बां. सवारी, मूंजवानी, शिशवानी,खरहूल आदि में झांकस फिरस.उ चाहस कि मुरारी गलत संगत में रहबो करे त ताड़ी– दारू, गांजा–भांग, बीड़ी सिगरेट, इयार–पियार आ छोकरीबाजी के लत से दूर रहो. बेटा के उमिर जइसे जइसे तार नियर उपर बढ़े लागल, उनुकर मन नोकरी ना मिलला से चिंता से भरे लाहल.

आखिर में एक दिन भगवान रामनाथ के मुराद पूरा कइले. कइसहूं खेत जमीन बेच के मुरारी के नोकरी फौज में दिला दिहलें. दानापुर में ट्रेनिंग के बाद मुरारी के पोस्टिंग चीन के सीमा डगलाम पर हो गइल. बाकिर मुरारी के मन नोकरी में ना लागे. उ बम, बारूद, गोला देखिए के डर जास. उ डगलाम सीमा पर तैनात हरदम अपना भाग पर झुंझलास रहस. उ सोचस रहस कि कातना जवान

बिना सीमा पर लड़ले, रिटायर हो जालें. ओह लोग के जिनगी बिना लड़ाई के सवारथ हो गइल. बाकिर एगो उनुकर किस्मत बा सिर मुड़ावते ओला पडी गइल.

भारत चीन में गोलीबारी शुरू हो गइल. मुरारी तिसरका लाइन में एके–47 लेके खाड़ा रहलें. दुनू तरफ से बमबाजी आ गोली चलत रहे. कइगो जवान शहीद आ घायल हो गइल रहलें. उनुकर साहेब कैपटैन अजय जवानन के हौसला आ उत्साह बढ़ावत रहस. बाकिर मुरारी के उदास आ मुरझाइल चेहरा देख के ऊ मुरारी के पीठ ठोकले आ कहलें कि सीमा पर जवान के आगे बढ़े के चाही, पीठ दिखावे वालन पर कोर्ट मार्सल हो जाला. जवान पर देश के गुमन होला.

अतना नसीहत देला के बाद कैपटैन अजय आगे मोर्चा संभाले चल गइलें. ई बात सुनते मुरारी के तन आ मन दुनू बैठ गइल.अपना साहेब के आगा बढ़त देखके उ डर गइल आ बगल के एगो गड्ढ़ा में जाके लुका गइल. संजोग अइसन भइल कि एगो गोली साहेब के लागल. उ तिलमिला के पीछे हटले आ गड्ढा में लुकाइल मुरारी के ऊपर गिर पड़ले. थोड़का देर के बाद अजय निहसबद गिरले रहस. फेरू उठ ना पवलें.

ऐने मुरारी के देह पर साहेब के खून लगला से पूरा चेहरा रक्तरंजीत हो गइल रहे. मुरारी सोचे लागल कि रात के अन्हरिया में भागे के आच्छा मउका बाटे. सूचना पाके चिकित्सा दल पहुंचो, ओकरा पहिले इहां से रफ्फू चक्कर भइल जरूरी बा ना त जान ना बांची. ऊ गड्ढा से धीरे से बाहर निकलल आ अपना साहेब के छोड़के भाग पड़वलस. मुरारी इहो ना देख पावल कि अजय जीअत बाड़ें कि मर गइलें. उ कइसहूं भाग के अपना गांवे चहुंप गइल. राहता में मुरारी के बरदी में देख के आ हाथ में एके–47 देख के केहूं टोक –टाक ना कइलस.

मुरारी के सोझा देखके उनुकर बाबू जी अचकचा गइले.उनुकरा के देखते कहलें कि ए मुरारी भारत त जीत गइल बाटे हो. अब त सीमा पर तैनात जवान लोग के तमगा मिले के टाइम रलअस. फेरू काहे चल अइलह?

मुरारी कहलें कि तू चिंता मत कर. सब ठीक हो जाई. जब हमार खोज खबर होई त सेना हमरा के लापाता घोषित क दिही. ओकरा बाद तोहरा सरकारी अनुदान मिली. हम एह एके–47 के डकैतन के भाड़ा पर दे देब. एक रात के 50 हजार से कम ना मिली. हरे लागी ना फिटकिरी रंग चोखा हो जाई. देखते बानी कि कातना रिटायर बंदूक वाला दिन में बैंक कर्मी आ रात में ...

बस कर ससुरा, बस कर.तें हमरा अरमान पर पानी फेर देले.बीचे में बात काट के रामनाथ बोललें.

अबही बाप–बेटा में गरमा गरमा बहस होते रहे कि उनुका दुआरी पर स्थानीय पुलिस आ फौजी जोंगा आके लागल . जोंगा से उतर के सेना के जवान मुरारी के धर दबोचलें. जोंगा धुरा उड़ावत रामनाथ परमार के आंखि के सोझा से दूर हो गइल.

❑❑

❍ ऊपर राजबाड़ी रोड, मकान नंबर–1,
नियर झरिया थाना, पो. झरिया–828111,
धनबाद ,झारखंड. मो. 9113171367

टूटल घड़ी

कौनो चीज के खोजे खाती जब उ बाबुजी के कोठारी में घुसलन त उनकर ध्याचन लकड़ी के अलमारी में रखल टूटल घड़ी के तरफ गइल।

"बाबुजी! हम इ घड़ी के अटाला में रख आइल रही रउरा फिर से एकरा के ले अइनी"।

"इ घड़ी एहीजे रही।" उनका घड़ी के ओर आते देख बाबुजी बोललन।

"पिताजी! इ घड़ी टूटल बा। हम रउरा के नया घड़ी किन के ले आइब । तब तक ले रउरा कोठारी में लागल दीवार–घड़ी से काम चला ली। इ कहते–कहते घड़ी उठा के चल देलन।

"इ घड़ी एहीजे रही," बाबुजी दहड़लन। उ खड़ा होके सोचत रहन की बाबुजी बु□स्तकब्धढ़ापा में सठिया गइल बाड़न। जब उ बाबुजी के एकटक देखते रह गइलन त बाबुजी बोललन," बेटा! जब हमरा पहिला तनखाह मिलल रहे त ताहर माई हमरा के इ उपहार के रूप में देले रही। एकरा के एहीजे रहे द।" भावुकता में बाबुजी के गला रुध गइल। उ बाबुजी के मुँह निहर लेन अउरु उ घड़ी के ओहिजे रख के कोठरी में से निकल गइलन।

लेखक– डॉ योगेन्द्र नाथ शुक्ल
विभागाध्यक्षकृ(हिंदी) शासकीय निर्भय सिंह पटेल विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर।

अनुवादक– डॉ शारदा सिंह
अतिथि अध्यापक (अंग्रेजी) शासकीय निर्भय सिंह पटेल विज्ञान महाविद्यालय, इंदौर।

❑❑

ऊ का रहे

अभियंता सौरभ भोजपुरीया

तहरा का हासील भईल उ हम नइखी जानत आ जाने के भी नइखी चाहत। बाकिर अतना जरूर कहेम की तू आपन जिन्दगी के अनमोल नगीना के खो देहलु जे तहरा के आपन जान से बढ़ के प्यार दुलार करत रहे आ शायेद आज भी करेला।

छोडा जायेदा तहरा जवन बुझाईल उ कैइलू खैर कवनो बात ना.... बाकिर तोहके हमार प्यार के कसम बा अब हमरा जिनगी में कबो दुबारा आवे के कोशिश मत करी ह... अब हम सहन ना कर पायेम ...अगर जिन्दगी में कबो हम सामने मील भी गईली ता मुँह मोड़ लिहा... काहे की अगर हम तोहके देखेम ता तोहार बेवफाई याद आई आ शायेद हम आपन गुस्सा के संभाल ना पायेम।

एक दिन अचानक मोहन के पुरान आपन स्कूल के डायरी मील गईल आ राधीका के दूर गईला के बाद राधीका के बेवफाई के बात लिखल मोहन के याद आवे लागल ।

बात तब के ह जब मोहन 14 सावन देख चुकल रहले आ उमिर के उ पड़ाव पर रहले की विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण होखे के उमीद ज्यादा रहे। एक दिन आपन रिस्तेदारी में मोहन के गर्मी के छुटी में गइले। सब ठीक ठाक रहे अचानाक से एगो चंचल खूबसूरत लड़की पर नजर पड़ल। आ अईसन पड़ल की नजर हटे के नाव ना लेव । उ चंचल लईकी राधिका रहली । हम उमिर भईला के नाते दुनो एक साथ खेले लागल लोग साथ बीते लागल । आ मोहन हर गर्मी के छुटी में राधिका से मिले खतीर चल जास । इ मेल जोल कब एगो दोस्ती आ कब प्यार एक दूसरा के जिन्दगी बन गईल मालूम ना चलल। दुनो अपना के प्रेम के बंधन में बाध देहल लोग। जिये मरे के कसम खाये लागल लोग।

एक दूसरा के देखल घंटो बात कइल हँसल हँसा वल अच्छा लागे लागल। बहुँत खूब सूरत जोड़ी लगे दुनो के बाकिर इ दुनो जोड़ी के केहु के बुरा नजर लाग गईल। राधीका आ मोहन के मेल जोल पर घर वाला सब रोक लगावे लागले ।

जब मोहन के मालूम भईल की उनकर प्रेम के बारे में सबकरा मालूम हो गईल बा ...आ उनकरा घर आइला पर भी रोक लाग गईल बा ...ता बहुत दुखी भइले। धीरे धीरे समय बीते लागल चोरी छिपे मिलत आ बात करत करत। मोहन उच्च शिक्षा खतीर शहर चलल गइले। आ एने राधिका के माई बाबु उनकर शादी खतीर लईका खोजे लागल लोग। कुछ महीना बाद मोहन आके आपन राधिका के हाथ आ साथ मांगले बाकिर लाख कोशिर कइला के बाद भी राधिका के घर वाला राजी ना भईल सब। मोहन फेर राधिका से मिल के पढ़े चल गइले। बिच बिच में कबो बात हो जाओ। मोहन के पढाई पूरा हो गईल । मोहन फेर एक बेर राधिका से मिले खतीर सब बंधन तूड़ के गइले बाकिर उनकरा बात पर राधिका के घर वाला राजी ना भईल लोग। राधिका मोहन के उ आखीरी मुलाकात रहे राधिका आपन प्यार के कसम दे देहली की आज के बाद हमरा से जन मिली हा आ हमरा के हो सके ता भूल जईहा काहे की हम माई बाबु के खिलाफ जा के शादी नइखी कर सकत। मोहन आँशु भरल आँख लिहले वापिस आ गईले। सारा सपना टूट गईल रहे मोहन बहुत मुश्किल से आपन के सँभाल पॉवले।

नोकरी करे लागले आ एक बेर फेर राधिका के तलाश में उनकर रिस्ते दार से निवेदन विनती कइले। बाकिर निराशा हाथ लागल। राधिका भी बात कइल बंद कर देहली।

कुछ दिन के बाद मोहन घर आइले ता मालूम चलल की राधिका के शादी हो गईल। आँख से आँशु गिरे लागल आ काँपत होठ से आवाज निकलल... ''हम तोहके पा ना सकनी मुद्तो चहलो के बाद गैर पा गईल तोहके चंद रस्म निभवला के बाद''।।

मोहन राधिका के बात उनकर बितावल साथ के साथे जिए लागले। आ आपना के बहुत दूर कर दिहले। मोहन के राधिका के रूप में आपन काम से प्यार हो गईल आ मोहन आपना के इगो कामयाब आ आदर्श प्रेमीध बेटा बना लिहले त्याग बलिदान मर्यादा के बंधन में बांध के। कुछ बारिष बीतला के बाद.. अचानक से एक दिन एगो सह कर्मचारी से कम्पनी में भेंट भईल जे राधिका के सहेली रहे आ मोहन के

कंपनी में आज काम करे खतीर आईल रहे । मोहन अपना के रोक ना पावले आ पूछ देहले की राधिका कइसन बाड़ी प्रीति...। प्रीति राधिका के बच्चपन के सहेली रहली।

ई का प्रीति के चेहरा मोहन के देखते लाल हो गईल बुझाईल की मोहन के जान ले लिहे। प्रीति के लाल लाल आँख से लागे की खून टपक जाई। सँभाल अपना आप के अतना गुस्सा काहे का हो गईल मोहन कहले। बहुँत संझावला के बाद मामला शांत भईल।

प्रीति कुछ बात करे के राजी ना होखस बाकिर बहुत नीहोरा कइला के बाद जावनं बात बतवली उ मोहन के जिन्दगी भर खतीर आँशु भरल रहे। प्रीति के जबान से राधिका बोलत्त रहली... तू बेवफा बाडा जब साथ ना देबे के रहे ता प्यार काहे कइला ... काहे तू छोड़ के दूर हो गईला तहरा लगे हिम्मत ना रहे की तू भागा के सादी कर ला ? ... जेकरा खतीर रात रात भर जागत रहल ओकर के भुला के खुद चौन के नींद सूते लगलल... इ हे करे के रहे ता तहरा केहु आउर ना मिलल ... तू हत्यारा बडा पापी बड़ा.... तानी शांत हो जा शांत मोहन कहले कइसे शांत रही कबो 5 शाल में जाने के कोशिश काहे ना कइला की उ कवना हाल में बाड़ी... तुंही उनकरा जिन्दगी में आइला ता उनकर माई बाबु ई हाल रह देहल ?

हमरो के कुछ कहे दा, देखा इ सच बा की हम उनकरा शादी के बाद बहुत दूर चल गइनी काहे की उनकर दुनिया/घर बस चुकल रहे। जवना के हमरा टुडे के कवनो अधिकार ना रहल। हम प्यार ता आज भी करीले बाकिर उनकर मन से आपन त्याग से उनकरा खुशी से उनकरा समर्पण से ...प्यार के मतलब एक दूसरा के पावले ना हा प्रेमी के खुशी में आपन खुशी देखल ही हमारा खतीर बड़हन हा प्रेम .. उनकर माई बाबु के खुशी सायेद हमरा साथे सादी कइला में ना रहे ... आ उनकर खुशी ना रहे की उ हमरा साथै भाग के शादी करस ... बस एही खुशी खतीर हम दूर हो गइनी... प्रीति इ बात सुन के जोर जोर से चीला 2 के रौवे लागली .... ना ई एगो छोट फैसला हम्म्म्म हमरा राधिका के ऊपर पहाड़ बन गईल बा हो पहाड़ .. राधिका के माई बाबु बिना सोचले समझले केहु आउर पर विश्वास करी के। राधिका भी आँख बंद करी के विश्वाश कर लिहली जवना के नातीचा आज भोगत बाड़ी... का बात बा बतावा ना साफ साफ बोला ..

जे राधिका के शादी करावल उ तहरा बारे में झूठ बोलल की तू नासा करे ला ! ताहार चाल चलल अच्छा ना हां ! तू कामाइबा ना ! न जाने का का.....

उ बहुत धोखा बाज निकलल जेकरा पर राधिका आ उनकर माई बाबु विशवास कइलस। धो खा से शादी करवा दीहलश.. जवन झूठ बोलले रहे तहरा बारे में उ सब गुन ओकरा में निकलल दारू बज गजेड़ी नसेड़ी सब गुन से भरल लईका मिलल।. उ मन के पुजारी ना तन के पुजारी निकलल आपन हवस के भूख मिटावला के बाद मारे भी लागल । उ कई बेर कोशिर भी काइली आपन माई बाबु के समझावे के आपन उपर बितल जुर्म के बतावे के .. बाकिर उनकर घर परिवार उनकरे के गलत साबित कर देव की तोरा मोहना के याद धइले बा उ कुछ साल ले बर्दाश काइली। जब माई बाबु के हकीकत मामूल चलल तब तक बहुँत देर हो गईल रहे । राधिका के उ माई बाबु के दिहल तोफा ही कुबूल रहे उ केहु आउर के साथै जाये के राजी ना भइली । जब ले जुर्म बर्दाश भईल काइली आपन एक दिन जीवन लीला समाप्त कर लेहली ....

मोहन इ हमरा आज ले ना समझ आइल की उ उनकर का रहे माई बाबु के खुशी माई बाबु के कुल के इज्तत आ आपन जीवन प्रेम के कुर्बानी।

❑❑

(बिहार)

डॉ शिप्रा मिश्रा

हमार ना ह

ई झंडा आ रैली हमार ना ह
ई गरजे के सैली हमार ना ह

आन्ही पानी में टूटल बा केतना मचान
जोरत चेतत भेंटाईल ना आटा पिसान
केतना रतिया बीतल पेट कपड़ा से बान्ह
छूंछे चिउड़े जुड़ाईल ई देहिया जवान
अब ई जोगिया के भेली हमार ना ह
ई झंडा आ रैली हमार ना ह

हमार जघे जमीनवें हेरा गईलें
एगो बएला के जोड़ी बिका गईलें
करजा भरत ई एड़ियां खिया गइलें
फिफकाली से मुंहवा झुरा गईलें
अब ई टूटही झपोली हमार ना ह
ई झंडा आ रैली हमार ना ह

हम त चईतो में बिरहा के राग गावेनी
हम त जेठ के दुपहरी में फाग गावेनी
हम त चूअत छप्परवा के फेर उठावेनी
हम त करिया अन्हरिया में लुत लगावेनी
ई सवारथ के खेली हमार ना ह
ई झंडा आ रैली हमार ना ह

हमरा खेतवे अगोरे से सांस ना मिलल
हमरा दूबर मवेसी के घास ना मिलल
ए कउवन में हियरा कहियो ना खिलल
लबराई के बजार से जियरा ना जुड़ल
ई गोबरा के ढेली हमार ना ह
ई झंडा आ रैली हमार ना ह

❑❑

❍ बेतिया, प0 चंपारण (बिहार)

सन्नी भारद्वाज

गजब माने होला बिहाने बिहाने

सुकऊवा बिहाने के दिशा देखावे,
जोन्ही अकाशे ले पहर बतावे।
पव के सहारा प जागेला मनई ,
इहे भिनसारा उंघाई छोडावे ।

दीआ अऊर ढ़िबरी जुड़ावस फलाने ,
गजब माने होला बिहाने बिहाने।

ओहर बांग मुर्गा ओहर कोयल बोले ,
मइनी गउरइया मुडेरी प डोले ।
डकारे ला बैला आ पांडा अखाड़े ,
दुहातिया भइस असाठी किनारे।

आ डाली के लेहना बहारस पुराने ,
गजब माने होला बिहाने बिहाने।

जगा द जा बाचा के आवस दुवारे ,
कहा बाली बाची मकनुआ गोहारे ।
आ ले जा हो बुढी देखा खाण पपरा ,
लउका ह तोरल बनाव जा कतरा ।

आवत बाडे पाहुन विदाई बनाने,
गजब माने होला बिहाने बिहाने।

पराते में चउसा गोताइल ह देखी
ठिल्ली में सिलफर घोराइल ह देखी
पहारे क भेली ह थरिया में फोरल,
सिंघाडा ह बाहा के खांची भर धोवल।

त दतुइन दबे लागत सभके जबाने,
गजब माने होला बिहाने बिहाने।

खांची कुदारी बा कांहे कपारे ,
जइहा भर घुमे मत रहिह दुवारे।
कहत गइले ओहर से कचरी भेजाइब,
भेजा दीह खाना अबेरे ले आइब।

लइका त खुश बाबा गइले सिवाने,
गजब माने होला बिहाने बिहाने।

❑❑

❍ भभुआ (बिहार)

गीत

सूर्य प्रकाश उपाध्याय

भइनी सेआन जहीना से संवरियां
मोर हिया बीचे उठे हाय गजबे लहरिया

गजबे उफान चाल लगावेला अगन
हाय राम गदरल सोरह के उमिरिया

नैना बेकल खाली उनुके फिकिर में
लागे देखी आईं गली–गूचा दिन–दुपरिया

तड़पत बानी हम निरहू के बिना
मीन जइसे तड़पेली सोन के अररिया

चहऽ – चहऽ सावन लागे झुझुआवन
निरखत बानी हम पिया के डगरिया

गहना – गुरिया सिंगार कवना काम के
जिनिगिया भइल अन्हरिया – अंजोरिआ

लउट आवऽ पिया मोर अटकल परान
फेफरी परल देखऽ लगावत गोहरिया

कमाए गइले माटी निअन धन परदेशवा
उजड़ गइले सोना निअन दिल के नगरिया

भरके करबऽ का मन के
गगरिया
सब सुख घास जब रहिहें ना मेहरिया

❑❑

❍रोहतास–बिहार

गाँव

डॉ. कुमार नवनीत

काठ करेजी भईल समईया
पल पल बदलत दाव,
बिछिलायीं जनि, धरीं थहा के
आपन एकहक पाँव।

सभ धवते बा, आप न धाईं
सगरी सपना बेंचि न आईं
मोल न कवनो मोल बिकाला,
जहवाँ रहीं इहे सरियाईं
आईं आपन छान्हि छवाईं
तेजि महलिया ठाँव।

ऊहवाँ कहाँ चूल्हि–चुहानी
साँझि क गम्मज, मीठी बानी
चह–चह चिरइन के सुर–संगम
जेठ दुपहरी हवा सुहानी
बिसुरि न जाईं, तनि पतियाईं
बाग बगइचा छाँव।

सुन्न मड़इया अँहकत रोवै
असुवन से अँचरा के धोवै
ठूँठे बीरिछ बिनु पतई के
भलहीं ठाढ़ तबहुँ ना सोवै
राम–रहारी के जन तरसे
उजरल–पुजरल गाँव।

❑❑

❍गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

गजल

मदनमोहन पाण्डेय

रोज मरघट पर दीया जराइले हम।
सांचे पथले पर दुबिया जमाइले हम।।

आगि लागल भले हमरे मड़ई में बा।
लोग सनकी कहे, गीति गाइले हम।।

फेरि के मूंह काटे किनारा सभे,
आजु समुझेला हमके बेचारा सभे।

केहू गहंकी ना एइजा देखाइल कबो।
का करीं आपन गठरी लुटाइले हम।।

फूल केतने फुलाइल बा फुलवारी में,
डूबि जाला ललक मन के लाचारी में।

लोग के देखि के लीकि खिंचनी कबो।
आजु अपने खिंचलका मेटाइलें हम।।

एक तऽ बीरान अपने बगइचा रहे,
आंखि सोझां हमेशा अन्हरिया रहे।

जवन छुवनी सुमन ऊ हे मुरझा गइल।
कइसे का भइल,किछु ना जानीले हम।।

❑❑

❍ कुशीनगर, उ0 प्र0

फुलवारी

दीपक तिवारी

शौख से जौन लगवले रही,ओ पर चलता आरी,
आँखी के सोझाँ हमरा ऊ,उजड़ रहल फुलवारी।

देख भाल में कमी न कइनी,बेरा से सिंचाई,
तरह,तरह के जीव जंतु से,रखनी सदा बचाई।
धोखा दिहलस हमरा के ऊ, फल देबे के बारी..
आँखी के सोझाँ हमरा ऊ,उजड़ रहल फुलवारी।

हरा भरा सुंदर लागेला, कइल मम बागवानी,
आज बूझाता व्यर्थ भइल,दिहल ओह में पानी।
मुसीबत में डाल देले बा,संकट में ऊ भारी..
आँखी के सोझाँ हमरा ऊ,उजड़ रहल फुलवारी।

दुआ कइनी जौना बदे हम,मन से हो दिन रतिया,
टूट,टूट के बिखर गइल ऊ, छन में फूल पत्तियां।

जोड़े में जेके गुजर गइल ,मोर उमरिया सारी..
आँखी के सोझाँ हमरा ऊ,उजड़ रहल फुलवारी।

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

ए भइया!जिनगी के रहिया में..

ए भइया!जिनगी के रहिया में,
सुख–दुःख के लागल मेला बा।
मोह, माया में पड़ल बा सभे,
बाकि हर इंसान अकेला बा।

हई हमार ह हऊ तोहार,
एहि में लोग भुलाइल बा,
बड़का–बड़का पगड़ी खातिर,
इहवा सब केहु बउराइल बा।

हम हई बड़का, तू हव छोटका,
सबका ई रोग धराइल बा,
आज तक केहु ना कुछ आइल लेके,
अउर नाही लेके कुछ गईल बा।

प्रेम बना के सबका संग रह,
इहे राजीव के निहोरा बा,
मन मे भरल वैर के छोड़,
तब दिखी दुनिया में केतना अंजोरा बा।

ए भइया!जिनगी के रहिया में,
सुख–दुःख के लागल मेला बा। ❑❑

❍ **राजीव नंदन मिश्र (नन्हें)**
सरना, शाहपुर,भोजपुर (बिहार)

देवेन्द्र कुमार राय,

छदमी बनल बा छांह

केहू के रौंदत चल अइसन इंहा के चाल भइल,
कहीं का बात जमाना के अजब हाल भइल।

लउकत नजर के सोझा मुंह मोड़ के चलीं,
जनलो प हर दरद के संग छोड़ के चलीं,
फेरा लगल बा एहीमे कि माल का भइल।

आपन बा आजु उहे जे कुछऊ त दे रहल बा,
मानेला सभे साँच उन्हुकर जवन कहल बा,
रउवे कहीं कि जियल इहां जंजाल का भइल।

जहवां चलीं गली में छदमी के छांह लउकेला,
बदन के अपने वसन डेरावत साथ धउगेला,
कहला प अइसन बात के मलाल का भइल।

सासत में सुसुकत सांस लागे उखड़ रहल बा,
आदमी ना केहू बांचल देवेन्दर के इ कहल बा,
मनवा बा हमसे पूछत सभ कंगाल का भइल,
कहीं का बात जमाना के अजब हाल भइल।

❑❑

❍ भोजपुर,बिहार

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

आलोक रंजन

किताब

किताब तुम क्यों नहीं झूठ बोलते
क्यों तुम तो जलाएं जाते हो इस दुनिया में
तुम्हारे साथ भी तो किया जाता है
गलत व्यवहार
फिर तो तुम्हें भी करनी चाहिए
चापलूसी बोलना चाहिए झूठ
दुसरे के लिए नहीं बल्कि अपने बचाव के लिए।

तुम सच उगलते आ रहे हो
प्राचीन काल से आधुनिक काल तक
मध्यकाल में भी तुम्हें किसी ने नहीं उकसाया
स्वर्ण मुद्राएं देकर
किसी ने नहीं कहा जोर से
धमका कर की बदलो
मेरा सारा इतिहास और भूगोल।

बताना आने वाली जनमानस को हमारी उपलब्धियां
करना प्रसंशा ताकि आदर्श रहे
और कहीं जिन्दा उनके दिलों दिमाग में
लेकिन तुम तो सब सच सच कह डाले
बात भी बता दी चारणों की और दरबारी कविओं की
तुम उनसे ही आज सामने आये हो
उनकी बातें विचारों को ही पढ़ते हैं हम
लेकिन यकीन करते हैं तुम पर किसी
इतिहासकार दार्शनिक लेखक कवि पर नहीं।

❑❑

❍ भोजपुर, बिहार

कोखिए में मार देलू माई

अवधेश कुमार चौधरी

कइनी कौने हम कसुरवा
कि कोखिए में मार देलू माई
मार देलू माई २
कइनी कौने हम कसुरवा कि
कोखिए में मार देलू माई

दुनिया ना देखनी, कुछु ना समझनी,
काहे खाई लेलू दवाई
ए माई काहे कोखिए में मार देलू माई————————

बेटा होखला पर बाजेला बधाई ,
घरे – घरे बँटाला मिठाई।
बेटिया होखते घर में छा जाला उदासी,
काहे भेद करेलू तू माई
बबुआ होखले आँखि के पुतरिया,
बेटी काहे होखली पराई
ए माई ,बेटी काहे होखेली पराई
ए माई काहे कोखिए में मार देलू माई———

ना होई बेटीया तऽ बेटवा के
केकरा संगे होई सगाई
बहिन ना होई तऽ राखी में सूनऽ
पड़ जाई भाई के कलाई।
ए माई ————————

नवरात्रि के दिनवा खोजेलू तू बेटी के,
पूजे खातिर ओकर चरणनिया।
आवे वाली दुनिया में बेटी नाही रही
जब कइसे के घरे बर परछाई
ए माई ————————

समाज के बचावे खातीर भ्रुण हत्या होखे बं
द तबे बचिहे समाज के ललाई
बेटी आज बेटवा से हर ओरि आगे बाड़ी,
बेटी जन्म सुखदाई
ए माई.....

❑❑

❍ कोलकाता

बरसात

डॉ सुरेन्द्र कुमार

अइसन सुघर बरसात भइल
ताल तलईया भर गइल
गाँव हमार संवर गइल
खेती के शुरुआत भइल

चिरईं –चुरुंग चहचाए लगली सन
पेड़– पतई हरिअराए लगली सन
खेत–खेताड़ी जोताए लगली सन
कजरी के घरे–घरे शुरुआत भइल
अइसन सुघर बरसात भइल

लरिकईयाँ गुनगुनाए लागल
दोल्हा–पाती खेलाए लागल
चीक्का–बद्दी फनाए लागल
हरिअर–हरिअर घास– पात पर
मौसम के अइसन मिजाज भइल
अइसन सुघर बरसात भइल

बरसात के बात दिन में लागत रात
घनघोर बदरिया छवले बा
मन में शोर मचवले बा
'सत्यन' लेखनियाँ लिख– लिख
खुशी के फूल खिलवले बा
अखियन में खुशी के बरसात भइल

ताल– तलईया भर गइल
अइसन सुघर बरसात भइल!!!

❑❑

❍ भभुआ, बिहार

बबुआ

डॉ रजनी रंजन

बाबू रामरतन सिंह के घर में बड़की बहुरिया के बच्चा जनमला के खबर मिलल बाकिर पाँच मिनट बादे ओकरा मरला के खबर भी सुनावल गईल। गाँव में मातम पसर गईल बाकिर रामरतन सिंह के मुँह पर कवनो दुःख ना झलकत रहे। शहर से एक महीना पहिले बहुरिया गाँवे आइल ताकि परिवार के बीच में परसउती होय। पनरह बरीस बाद ई शुभ दिन आइल रहे। शहर में अकेले दिक्कत ना होय एह से अपना गँवही में आ गईली काहे कि उनकर नइहरवो गँउवा के लगहीं रहे। दुनो परिवार के साथ सब ठीक होई,इहे सोच के ई लोग गाँव आ गईल रहे बाकिर भगवान के कुछ आउरे मंजूर रहे।

भोरे–भोरे बड़की माई बथानी में कोना मे सिसकी दे–दे के रोवत रहली।मन भर रोवला के बाद बहरी अइली त मंगल बो के देख के ठिठक गईली।

मंगल बो से कुछु कहे चाहत रहली बाकिर मुँह से आवाजे ना निकलल ।रामरतन बो पूका फाड़ के रोवे लगली।मन भर रोवला के बाद कहे के शुरू कइली– 'ओकर शराप लाग गईल हो'। केकर....। केकर.....। बोलीं नाऽऽ। 'ओकरे रामजतन जेठ जी के बे...ट... कहते–कहते रूक गईली।' मंगल बो फेर धीरे से कान में फुसफुसा के कहली–''हऊ छकवाऽऽऽऽ''। जबाब दिहली– हँ....।

आज चालीस साल पहिले के घटना आँखी के सामने घुमे लागल। रामजतन जेठ जी के घरे किन्नर संतान भइल रहे। रामजतन जीजी रामरतन सिंह के आगे गोर गिर के गिड़गिड़इले रही– जइसन भी बा ई हमार जनमतुआ ह, हमरा आदमी के ई निशानी बा।अइसन मत करीं बाबू। हम अपना बचवा बिना जियते मर जाइब। अगर राउर संतान होखित त का फेंक देब? ई सुनते ऊ झट से कहलन– 'हँ' एह से ऊपर लकवा आ हमनीयो के जिनगी ठीक कटी।राम. रतन बो निहोरवो खूबे कइली बाकिर रामरतन अपना इज्जत के आगे ममता के छोट बुझलन। ऊ लइकवा के हिजड़ा समुदाय के दे दिहलन। रामरतन के कनिया भी अपना आदमी के ममता के मोल बतावे के कोशिश कइली बाकिर ऊ केहु के ना सुनलन। रामरतन बो ओही घड़ी से रोजे देवता मनावस कि अइसन बाप केकरो ना मिले। रामजतन जीजी जब ले जियली ऊ ओह किन्नरन के घरे चोरी–छिपे केकरो से आपन बचल खुचल आ जोगावल धन देके बचवा के खबर मंगा लेस। एने रामरतन सिंह भी ओ. करा खातिर समय–समय पर रूपया पैसा पेठा देत रहलन। रामजतन बो मरे घड़ी हाथ पकड़ के रामरतन से कहली– हमरा कुछु ना चाहीं। हमरा के आग हमरा बचवा से दिया देब– कहते कहते लुढ़क गईली।

रामरतन वादा निभइलन बाकिर छुप छुपा के। कंटहा बाभनन के बीच में ओकरो के घुसा देहलन। एह काम खातिर पइसा भी देबे के पड़ल।एगो कहावत बा कि साँच कबो ना छुपेला, एही से कानाफुसी होत–होत गाँव में ई बात आग नियन पसर गईल कि हिजड़वे आग देहलस ह। केहु बड़ाई कइलस त केहु मुँह बिचकवलस बाकिर रामरतन के आगे बोले के केहु के हिम्मत ना भइल।

दू पीढ़ी बाद फेर उहे दिन फिर गइल रहे। आजुओ रामरतन के परिवार ओही जे खड़ा रहे जहाँ चालीस साल पहिले रहलन। उनका बड़का बेटा के संतान फेर ओइसहीं रूप लेके धरती पर आइल। आज रामरतन के कान में ई बतवे ना गइल कि लइकवा कइसन बा। खाली ई खबर मिलल कि बचवा जनमते मर गईल।

चमइनिया के पइसा खिया के सब परपंच ई शहरी मेहरारू अपने मिल के रच लेहलस आ दू दिन बाद शहर लउट गईल। बात ठंडा गईल ।

एक महीना बाद बड़का बेटा सरमन के फोन आइल तऽ ऊ बाबूजी के निहोरा करत कहलस– ''लइका बिना मेहरिया पागल भऽ गइल बीया। रो–रो के अँखिया बताशा भऽ गईल बा।एहीजा लोग कहता कि एगो लईका गोद ले लऽ त मेहरिया ठीक हो जाई'' सरमन ई बतिया मरूआइन होके कइसहुं कह पइलन।

बाबूजी कहलन– बहुरियो के माई–बाप से पूछ लीह ।जदि ऊ' हँ ' कह दीहें तऽ हमरा कवनो एतराज ना होई।बाकिर तनी लइकवा के नाक नकस देख के लीहऽ लोग। ना होय तऽ तनी अपना से मुँहवा मिला के लीहऽ। बाकिर केहु से अबहीं मत कहीहऽ लोग। सही समय पर बता दिहल जाई, ठीक बा.....परनाम– कहके

सरमन फोन रख देहलन।

माह भर पूरा होते–होते गाँव में सगरो खबर फइलावल गईल कि बहुरिया फेर पेट से बाड़ी। सालभर पूरा होते होते बेटा भइला के खबर आइल। खूब देवता पुजइलन ।खूब बधाव बाजल। रामरतन सिंह भोज भी दिहलन । मोछ पर ताव भी खूब दिह. लन। बाकिर एह बेरी बहुरिया गाँव ना आईल। लइका आ लरकोरी के सुरक्षा खातिर बड़की माई आवे से मना कर दिहली।

सालभर पर लइका लेके बहुरिया गाँव आईल बाकिर दुइये दिन में लइका के सरदी–खाँसी के बहाना करके वापस लउट गईल। अब ऊ गाँवे कबो–कबो आवे। देखते देखते लइका बाइस बरीस के लंबा चौड़ा जवान हो गईल। सब घर के लोग उनका के बबुआ कहे।अबकी ई गाँव आइल रहे तऽ ओकरा बियाह के बात पक्का करे के रहे।

ऊ खूब मजकिया रहे आ रोटी खूब सुंदर गोल–गोल बनावे। कबो–कबो तऽ आरसी में अपना के खूब निहारे। बड़की माई कहस– लइकी हइस का रे! तब से ऐनकवा के पीछे पड़ल बाड़े। एतना सुनऽते खिखिया के भाग जाय। बाकिर बहुरिया के मुँह फुल जात रहे। ऊ कहे लागस– का अम्मा जी! हमार बेटवा के हरदम बेटी बोलीला। हई घरवा में छोटकी के चार गो बेटी लोग कम पड़ऽता का। अभी दहेज देत–देत घर खाली हो गईल बाकिर राउर मन नइखे भरऽत तऽ कहीं छोटकी पांच पूरा दे। छोटकी एतना सुनते भड़भड़ करे लागल– अपना बात में रउरा लोग हमरा देहिया में आग काहे लगावत बानी। अब हमरा भाग में इहे रहे तऽ हम का करीं। रउरा लोग के कद तऽ बबुआ बढवले बारन नू! उनका शादी बिआह पर ध्यान दीहीं लोग। शहरवे से कवनो लइकी ले आवे के चाहत रहे।बबुआ के मन जुकुर होईत। बड़की माई कहली– चुप रहऽ। एगो लइका बा जान पहचान मैं बढिया लइकी खोज के बिआह होई। ई लसराकुटाइन मत करऽ लोग। बेटा– बेटी सब आपन आपन भाग लेके धरती पर आवेलें। तहनलोग के चिन्ता करे के जरूरत नइखे। परिवार कइसे खुश रही ई सोचऽ।

बिआह के नाम सुनऽते बबुआ हदबदा गइलन। पसीना छुटे लागल। बड़की माई कहे लगली –का रे! तू मरद हईस की ना! एतना पसीना तऽ आजकाल लइकिन सभन के भी नइखे छुटत। बड़की बहुरिया कहलस– ना ए अम्मा जी! हई आजकल के चढबाँकिन लइकियन के किस्सा कहानी तऽ केकरो के पसीना–पसीना कर दी। जब बिआह हो जाई त सब ठीक हो जाई।

खूब छानबीन कर के एगो सुंदर आ सुघड़ लइकी से बिआह हो गईल। ऊ गवना करा के जे नइहर गईल तऽ अइबे ना कइलस। तरह–तरह के बात होखे लागल। लइकिया बस एतने कहलस कि अबहीं हम पढे चाहतानी एह से हम ससुरार ना जाइब। बबुआ कभो–कभो ससुरार जास तऽ इज्जत खूब मिले। गाँव के लोग मेहरिया के चरित्तरहीन आ बबुआ के मउगा कहे।

लइकी पढे खातिर जिद कइली तऽ पटना में नाम लिखाइल। कुछ साल बाद उ पढ लिख के अफसर बन गईली। बबुआ भी नौकरी करे लगलन। पाँच साल बाद दुनो के एगे जगह रहे खातिर बड़की बहुरिया दुनो परानी जी जान लगा के व्यवस्था करा दिहलन। फेर पांच बरीस बीत गईल। दुनो परानी राजी खुशी रहे लगलन। छुट्टी होय तऽ गाँव छोड़ के सगरी घुमे निकल जाय लोग बाकिर कभी गाँव ना जास काहे कि गाँव के लोग दुनो परानी से संतान के सवाल करके परेशान कर देत रहे लोग। कभी कभी तऽ फुसफुसा के बाँझ आ हिजड़ा कहे में भी लोग संकोच ना करत रहे। एही डर से गाँव आये जाये के बात खतम हो गईल।

बड़की बहुरिया अपना पतोह के ई बेवहार से फुले ना समास। केतना बार देवता मनावस आ भाड़ा भाखस। एकबार बड़की बहुरिया अपना बहुरिया से कहली– ए रानी! तू हमार भगवान बाड़ू। हमरा बेटा के साथे रहतारू। हम सब बुझतानी।हमरे जनमल ह –कहके आपन बेटवा के जनम के कहानी सुना दिहली आ कइसे ऊ बचवा के लेके शहर चल गईली सब बता दिहली ।ई सब कहत–कहत आखिन से लोर के झरी लाग गईल। बहुरिया सास के चुप करावत कहली– ''ऐ अम्मा जी! रउरे तऽ असल में माई हईं। जनम देके बीगल माई तऽ कसाई होखेली। हमरा कवनो दुःख नइखे। राउर संस्कार उनका में खूब निमन दिहल बा। पहिलके रात के ऊ आपन घबराहट आ परेशानी के कारण बता के हमरा नइहर चल जाये के निहोरा कइलन। हम चलियो गईनी। चार महीना में एको दिन राउर बबुआ हमरा घरे ना अइलन। बाकिर समय से मनीआर्डर भेज देत जाये के निहोरा कइलन। मनीआर्डर के नीचे एके गो शब्द लिखल रहत रहे ''क्षमा''। एक दिन उहें त हमरा बाबूजी के समझा–बुझा के हमार नाम लिखावे के तइयार करा लेहनी। पढाईयो के खरच इहे देहनी। हास्टल में भी मनीआर्डर भेजस। ऊहां

दुगो शब्द लिखल रहत रहे– ''आशा''आ ''क्षमा''। एक मह. ीना पइसा ना आइल त हमार बाबूजी कहनी– अब लउकी ओकर असली चरित्तर। पर ई का! एक दिन बुथ से फोन आइल। फोन हम उठइनी । ई कहलन– तहरा टेशन में बानी।कोई अपना विशवासी के तनी पाँच मिनट खातिर भेज दऽ। तहार मनीआर्डर समय से ना भेज पइनी तऽ जरूरत सोच के खुद ही पइसा लेके आ गईनी ह। हम अब का करतीं ।खुदे गईनी टेशन। ऊहां हाथ में एगो लिफाफा पकड़ा के उ आगे बढ गईलन। ओह घड़ी हमार मन कुकुद जइसन हो गईल।मन में सवाल उठल– ई मनई कवन पाप कइले बा। का गलती बा इनकर! आ दुनिया में तऽ भगवान केतना लोग के सब देके भी कुछ ना देवेलन। तऽ ऊ लोग केकरा से कहेला आ ओकर परिवार का करेला। ऊपरवाला के लिखल केहु ना पलट सकेला।ई बात मन मे आवते हमरा देह में बिजली दउड़ गईल। हम सरपट भाग के इनका के धर लेहनी आ कहनी– अब ई सब ना होई।पईसा हम एके शर्त पर लेब कि रउरे पइसा देवे आइब आ हमरा संगे तनी समय बीता के जाइब। एतना सुनते उनका आँख में लोर भर गईल ।बस एतने भरल कंठ से कहलन– ठीक बा।मंजूर बा।ओह दिन से सब ठीक हो गईल। फेर रउरो खबर मिलिये गईल कि हमनी के साथे रहे चाहत बानी तऽ इहो भगवान पूरा कर देहलन। सास–ससुर हमनी के साथे रहे के बेवस्था करा दिहलें।

सास पतोह के बात बबुआ ओसारा से सुनत रहलन। उनका नजर में दुनो औरत उनका खातिर साक्षात देवी के रूप में नजर अइली। उहो आगे आके माई के अंकवारी भर के रोवे लगलन।ई देख के माई कहली– बबुआ! भगवान तहरा पर दयाल बानी।हई रानी के जे हमरा घरे भेज दीहनी। तहरा के भगवान एही से अइसन बनवलन कि रानी के संघतिया बने के रहे। कहते कहते केतना देवता पित्तर के नेवत दिहली आ पतोहिया के नेह से नहवा दिहली।

एक दिन खबर आइल कि रामरतन सिंह चल बसले। बड़की बहुरिया सपरिवार गाँव भागल। ससुर के गईला से घर बेमाथ हो गईल। सब किरियाकरम भइला के बाद सास कहली– ए बहुरिया! हई लिफाफा ऊहां के मरे घड़ी तहरा के देवे के कहनी। बड़की लिफाफा खोल के दे खलस। चिठ्ठी रहे। लिखल रहे– हम जानतानी ऊ लइका ना मरल रहे। बाकिर लोक लाज के डर से हम चुप रह गईनी। माई संसार के सबसे अनमोल चीज ह जे केहु केहु के भाग्य से मिलेला। बबुआ भी भाग्यशाली बारन जे तहरा नियन माई उनका मिलल। रूप गढल तऽ बिधाता के काम ह आ ओकरा के जियावल मानुष के काम। कोइयो चीज बीगला से करकट आ समेटला से धन होला। हमरा घर के कनियन सभ हमार मान आ मन दुनो बढवली ह सन। बबुआ बो के एगो लइका ले लेवे के होई ऊहे हमार बारिस होई। हम आपन सब धन के बारिस बबुआ के बनावत बानी आ साथ हीं पोती सभन के सब बैंक के धन देत बानी।

बड़की बहुरिया के आज मन खूब खुश रहे। आपन फैसला पर उनका खूब गरब भइल।

❑❑

❍घाटशिला, झारखंड

सबकर त अपने फेरा में रहत बा

राम बहादुर राय

एह जमनवा में कथनी आ करनी में
अन्तर बहुते होखत बा

सामर्थ्यवाने के त सब पूछतबाटे
गरीबन के केहू ना सुनत बा

चाहे करेजवो निकाल के दे दिही
तबो न केहू ओके मानत बा

बहुत पुराने परम्परा आवतबाटे
केहू नाहीं एका बदलत बा

बगिया के त मालिये सींचले बाटे
फल खातिर उ तरसतबा

इमानदारी से केतनो काम करबे
फरेबिये पुरस्कार पावत बा

सबके खातिर सीमावा पर लड़तबा
ओकरे के सब फंसावत बा

चुनाव में आके खूबे वादा होखेला
भला बता द के निभावत बा

माई–बाबू त बचवन के पढवलन
बुढ़ापा अकेला बितावतबा

मसखरे करे खातिर सब केहू बाटे
दुख पड़े त मुंह बिजुकावता

आपन काम ठीक बा तबे नीक बा
नाहीं त पूछे कहां केहू आवता

सभकर त अपने अपन लागलेबाटे
दोसरा के कहां पूछि पावत बा

❑❑

भरौली, बलिया, उत्तर प्रदेश

गाँव के माटी के खुशबू से भरल गीत

रवि शंकर सिंह

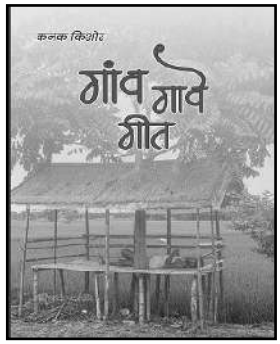

कवि कनक किशोर जी के भोजपुरी गीत संग्रह 'गाँव गावे गीत' पर आपन बात रखे के हमरा खातिर सुंदर अवसर मिलल बा ओह पर दूई बात करे के बहाने। एह से पहिले हिंदी के कविता आ कहानी संग्रह पे समीक्षा लिखले बानीं , बाकिर भोजपुरी कविता संग्रह पे समीक्षा लिखे के हमार पहिला प्रयास बा। एह संग्रह के साथे उहां के एगो हिंदी के कविता संग्रह 'हरित उलगुलान' मिलल बा।ओकरा पे फेरू कबो लिखल जाई।

चलीं देखल जाव कनक किशोर जी के भोजपुरी गीत संग्रह 'गाँव गावे गीत' के ।कवि एह संग्रह में रिसता–नाता, गाँव के संस्कृति, खेत–खलिहान, पर्यावरण आदि से बात करावत बानीं। एकरा में हर जगह प गाँव के माटी के खुशबू के मससूस कइल जा सकेला ।एह संग्रह में गाँव के जीवन के विविध रूपन के कई गो विधा में लिखल गइल बा। जइसे वसन्त, गीत, सनेरयु, फगुआ, हाइकु, चइता, मुक्तक ,गजल आ कविता।

किसान जीवन के पीड़ा, बेचैनी, हाहाकार आ एह सभन से मिलके बनल जीवन दृष्टि देखि कह सकेला कि कवि गाँव–देहात के बारीक चीजन के पहचान रखत बानीं। लिखत बानीं –

दाँव –पेंच अब बहुत भइल
शाम दंड अब छोड़ी
हम किसान के जात ह सीधा
मुड़ी जन हमार मुरेडी

शीर्षक 'दाँव –पेंच ' में आपन एह बात के कहले बानीं, जे किसान लोगन के तबाह कर वाला छद्म के पहचान कइला भर नइखे ,अंत मे चेताव. नियो देत बानीं –

राउर करनी गला दबावे
अब त बुझीं बतिया
मुअब भले रुकब ना हम
सुन सेठवन के नतिया।

कवि गजल के माध्यम से समाज मे हो रहल परिवर्तन पे जोर देत बानीं ।इहां के आजु के जुग में वैश्विक, बाजारवाद व्यवस्था तथा सुविधा भोगी –आत्म केंद्रित जीवन–शैली से उभरल गाँव के सांस्कृतिक व्यवस्था पे चोट करत जगहा जगहा पर करत बानीं। आजु लोगिन के जीवन मे बनावटीपन साफ झलकत बा ।आपन संस्कृति के छोड़के दूसरा के संस्कृति के अपनाववेवाला के कवन गति होला ओकरा प करारा व्यंग्य करत कवि लिखत बानीं –

गाँव–गाँव ना रहल ,देख शहर सरमाला
बहुरिया भसुर संग नाचे, ई का कहाला।

.

गाँव छोड़ शहर में आ बसलीं
नमूना बनलीं फैशन बाजार के।

गाँव– गाँव अब ना रहल हम का कहीं
हर अँगना बाजार बनल हम का कहीं ।

गाँव के समाज में कतना बदलाव कवना –कवना क्षेत्र में होखे के चाहीं, ई कुछ मनई लोग के अभियो नइखे समझ मे आवत। हँ ई कहल जा सकेला थोड़िका लोगिन में बनावटी बदलाव आ गइल बा।. जवना के कारण बाहरी संस्कृति के गाँवन में बढ़त पईठ बा।

गजल पढ़ला पे लागत बा कि कवि के सवालके दयारा सिकुड़ल नइखे आ एकरा के एगो खेमा में ना बांधल जा सकेला ।अभिजात वर्ग के प्रति एगो चेतावनी देखे के मिलत बा ।जनता के पक्ष में रचना आवाजो उठावत बा।कवि आजु के समय के परिस्थितिन के अंकितो करत बानीं। करोना वैश्विक स्तर पर लोगिन के चपेट में लिहलस ।ओकरा से लोगिन के जीवन अस्त –व्यस्त हो गइल रहे।जवना से आपन देस कइसे वंचित रहित ।सबसे बड़ बात ई बा कि ओह समय में सत्ता आपन वास्तविक चरित्र में नजर आइल ।आपन जिमेवारी से भागत लागल ।आ साफ शब्द में कहल जाय त अइसनो विषम हाल में सत्ता के ठेकेदार लोग आपन आदत से बाद ना आइल लोग । कवि लिखत बानीं–

कोरोना के नाम पर,लूटल ठीक ना देस के
देस माई नू हऽ जी , बूझीं एह बात के।
देस के लूटेवाला लोगिन के आपन मूल्य आ प्रतिमान के प्रति याद दिआवत कहत बानीं –

जुल्म कबले सहीं , रउवे बताईं हमरा के
इंकलाब जगावता हमके ,बुझी एह बात के।

आजु मानव के जिनिगी दूई भाग में बँटल बा।गाँव के प्राकृति परम्परा आ आधुनिक शहरन के चमक ध ामक वाला।एह बीच लोग तकनीकी संसाधन के मात्र एगो खिलौना के भाग बनि के रह गइल बा ।क. वि के फागुन के गीतन के पढ़ला पर ई लागत बा कि कतना दूर आ गइल बानीं जा हमनी के। आज गाँव में फागुन आ वसंत के गीत नइखे लउकत।परम्परा टूट रहल बा। ओकरा जगह पर दूसरा परम्परा जन्म ले रहल बा जे गंवई गंध निगल रहल बा।हमनीं के जवन आपन माटी के भाषा बा ओकरा से भागत बानीं जा आ विदेसी अउर अंग्रेजीपन वाला भाषा मुँह में जबरन डालत बानीं जा।आपन भाषा में जवन बात कहल जा सकेला ऊ दूसरा भाषा में कबहूं सम्भव नइ खे। जवन मिठास भोजपुरी भाषा में बा। नाता – रिसता के महीन बुनावट, हिया के छुए वाला गीत जवन गाँव के सामुहिक रूप से प्रतिनिधित्व करत बा ऊ फगुआ में बा।एक शब्द में कहीं त कवि आपन गीतन के माध्यम से गीत के नदियन में स्नान करावे में सफल बानीं। एगो बानगी देखिं –

कहँवा के हरदी, कहँवा के चुनरिया
कहँवा से रूप के निखार
बहे फगुनाहट बयार हो।

लाल फूल सेमर ,लाल ही पलासवा
पीयर सरसों से शोभेला बधार
बहे फगुनाहट बयार
फागुन ... ।

कवि लोकगीतन के माध्यम से किसान के जीवन के सभ पहलू के रेखांकित कइले बानीं।कवि के समृद्ध शब्द संसार ,जीवन अनुभव आ प्रकृति के आत्मसात कइल रूप गीतन के सम्प्रेषणीय बनावत बा। गाँव के माटी से जुड़ल कवि आपन गीतन में संवेदना से भर देले बानीं। ई सब गुन गीतन के एगो अलग ऊँचाई पे ले जात बा। चइता में ई सब देखे में मिलल ,चाहे पति पत्नी के प्रेम होखे,आंतरिक छटपट. ाहट होखे भा चाहे किसान लोगन के वर्तमान दशा हो खे। आपन अनुभव से बनल चदरी के खाली ओढ़त नइखी ,ओकरा के मुखर हो के आवाजो देत नजर आवत बानीं। लिखत बानीं –

बड़–बड़ बात करी हमरा के ठगलस
करी देल हमके किनार
बेच ताड़ हमनी के सेठवा के हाथे तू
कइल ना कवनो बिचार ।

ई कहल जा सकेला कि कविता ,गीत, गजल एगो रचनाकार के हृदय के आईना होला ।कवि के रचल चइता के गीत किसानी स्वभाव के अनुरूप लागत बा।कवि के गाँव के संस्कृति से केतना प्रेम बा ,खेत – खरिहान से केतना प्रेम बा ऊ एह संग्रह में साफ देखल जा सकेला।गाँव कवि के नस –नस में बसेरा बनवले बा।गीतन के पढ़ला पे कवि के भावुक हृदय के साथ बहत चलल जात बा पाठक । लिखत बानीं –

खेत में परान बसे करी हम मंजूरी हो
जुड़े नाही भर पेट अन्न हो
करज में डूबी हम रोटिया खियवनी हो
करज में मुअला किसान हो
ए रामा ... ।

रचनन के भाषा काफी प्रभावशाली बा। गीत सब कवि के किसान मन होखे आ गाँव से जुड़ाव के परिचित करा रहल बा ।रचना अभिव्यक्ति में अंलकार के प्रयोग कइल गइल बा।कुछ कमी के देखल जाव त पहिला प्रकाशन के कमी नजर आवत बा।जवन कुछ पन्ना के खाली छोड़ देले बाड़े आ किताब के विषय सूची गायब बा। दूसरा रचना में कहीं –कहीं बिम्बन में दोहराव देखे के मिलत बा।कुल्ह मिला के कहल जा सकेला की एह संग्रह के अधिकांश रचना रोचक आ पठनीय बा जे पाठक के अंत तक अप. ना से जोड़ले रखत बा।

पुस्तक – गाँव गावे गीत
लेखक –कनक किशोर
मूल्य –220
प्रकाशन –सर्व भाषा ट्रस्ट ,नई दिल्ली

मझौवाँ बांध ,रुद्रपुरी
आरा –802301 (बिहार)

झारखंड के राजधानी रांची के भोजपुरिया कवि

अंकुश्री

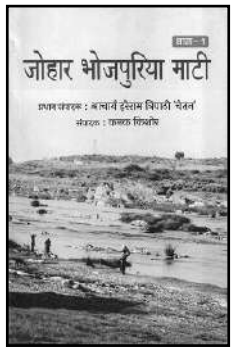

भोजपुरिया लोग हर जगह फइलल बाड़न। ऊ लोग जहां बाड़न आपन गतिविधि बनवले रहेलन। झारखंडो में भोजपुरी भाषाभाषी लोगन के संख्या बहुत बा। झारखंड राज्य के राजधानी रांची ह, जंहवा भोजपुरीभाषी लोगन के नीमन संख्या रहेला। झारखंड के सुनाम संपादक श्री कनक किशोर रांची में रहनिहार भोजपुरी कविअन के एक जगह बटोरे के प्रयास कइले बाड़न। उनका संपादन में एगो बड़ा काम के किताब जोहार भोजपुरिया माटी भाग–1 छप के आइल बिआ। एह किताब के प्रधान संपादक बानी स्वनामधन्य आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी। सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित 150 पृष्ठ के सुंदर गेटअप के ई किताब के कीमत 225 रुपया बा। एह में बारह कविअन के भोजपुरी कविता समेटाइल बा।

दधीचि ऋषि के हड्डी से बनल धनुस लेखा आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी विरचित साहित्य में बहुत ताकत बा। इहां के 'रस रही जिन्दगी में तबे सभ रही' कविता में लिखत बानी,

'बांची संवेदना जब, तबे सभ रही।
रस रही जिन्दगी में तबे सभ रही।।'

'ई शरद् के अँजोरिया कइसन' बा देखल जाओ,

'भइल वादा सुमन से अब खिलखिलाये के,
शर्त बा चिरइन के अब बस चहचहाये के।'

अगिला कविता सोना चरन सुरुज के में प्रकृति के चित्रण देखल जाओ,

'जूड़ा सुबह संभारे तम के, मुँह से झटकि हटावे।
पगमें पायल फूल–गमकके, चरइनि के लय गावे।'

एगो कविता सपना के कुटी के पंक्ति बा,

'छन–छन अपना सांस के दीलें लोह लगाम।
ले सरपट भागे हठी, पल–पल उमिरि तमाम।।'

'चेतन' जी के अंतिम बारहवीं कविता बिया कविता हऽ ऊहे असल। एहमें कविता के मरम देखे लायक बा,

'भींजल पल, नयना–नमी, याद–परेव उदास।
आंच करेजा में रहे तब कविता हो खास।।
कंठ दबल कुछ शब्द जब, अछरि जीभि के दाब।
अधर दबल कुछु चाह जब कविता बने नयाब।।'

पतरातू थर्मल के भोजपुरिया गरमी केहू से छिपल नइखे, जे श्री विपिन बिहारी चौधरी जी के कवितन में लउकत बा। उमिर के नौंवा दसको में रांची में रह रहल श्री चौधरी जी के लेखनी में रवानी बनल बा। 'माटी के गीत सुनावे दऽ', 'बिटिया वनदेवी के', 'सूरज के चोरी', 'बूढ़ा बरगद के पेड़', 'माई के खत बेटा के नाम' आदि कुल इगारह कविता नमूना के तौर पर छपल बिआ। कुछ पंक्ति देखल जाओ,

'वेणी में सजल वनफूल, गोड़न में महावर
अस धूल, चंचल नयन, सोख चितवन,
छन इहवां, छन उहवां ।' (बिटिया वनदेवी के)।

'बहुमंजिली इमारत खड़ा हो गइल, हमरा सूरज के चोरी हो गइल।' (सूरज के चोरी)।

'हारल–थाकल राही बटोही लेत रहन विराम, एकरे छांह में सांझी खानी बइठत रहे चउपाल।'
(बूढ़ा बरगद के पेड़)।

बेटा के दुरबेवहार से माई कहत बाड़ी,

'ई जनती मूड़ी सोउरी में ममोरतीं,
देखती ना दिन जे दे रहल बाड़ऽ।'
(माई के खत बेटा के नाम)।

एह किताब के तीसरका कवि बाड़न अंकुश्री। इनकर 'आदत पड़ गइल बा', 'आदमी से डर रहल बा आदमी', 'बसंत लेके उधार', 'बेटी के बिदाई', 'हो गइल मन उदास', 'दुरभाग देस के जागल' आदि आठ कविता एहमें छपल बाड़ी स। नमूना देखल जाओ।

'आधा पेट खा के दिन,
आ भोथर टेंगारी से लकड़ी, काटे के'
(आदत पड़ गइल बा),

'आदमी बने के उपाय ना कर रहल बा आदमी,
आदमी के देख–देख के डर रहल बा आदमी।'
(आदमी से डर रहल बा आदमी),
'बाजे पायलिया तहरा जे गोरवा में,
चिरइयां नकल उतारे संझिया के पेड़वा पर।
तहरे ढ़िठाई ले के पईंचा बयार, आ गइल
बसंत ईयाद देलस तहार'
(बसंत ले के उधार),
'माई साथ दुअरा तक,
भाई–बाबू पक्की ले,
भउजी करस अंगने बिदाई।'
(बेटी के बिदाई),
'माई–बाप भइल बुढ़ियो–बुढ़ऊ,
अब रिस्ता सब भुलाइल।
सास–ससुर भइल मम्मी–डैडी,
रिस्ता बा अगराइल'
(दुरभाग देस के जागल)।

संकलन में क्रमांक चार पर कवयित्री डा0 विभा रंजन के 'जिनगी अनमोल बा', 'छोड़ जाए के खातिर', 'आपन केहू नइखे', 'शिव वंदना', 'सूर्यास्त' आदि दस गो कविता छपल बाड़ी स। इनकर कुछ पंक्ति बा,
'राते फिर मन रहे झंवाइल,
केहू आपन बड़ा इयाद आइल'
(जिनगी अनमोल बा),
'तूँ हमरा पास नइखऽ, हम जानतानी,
एक बार त मिले के आव !
मिलन के आस लेके कुछो ना तऽ
हमार शिकवा, कुछ शिकायते लेके'
(छोड़ जाए के खातिर),
'लोग पूछेला बहुत आँखि में लोरवा के कारन
ए हमरा लगे बतावे खातिर कवनों वजह नइखे'
(आपन केहू नइखे),
'मां तोहार गुण हमरा में आइल,
तबे हमरा ई समझ में आइल'
(बहुत इयाद आवेलू तूँ माँ),
'रूसल बिया अँजोरिया, दूर होखत जाले डगरिया।
अंजोरा भुलाइल बा, अकिल बौराइल बा।
(आखिरी सांस आ गइल),
'हिरदया के दुखवा अब केकरो के बताईं मत।
कबहुँ भी केहू के आपन दुखड़ा सुनाईं मत'
(बताईं मत)।

सारिका भूषण कविता–कहानी त लिखबे करेली, साहित्यिक गतिबिधियनो में खूब सक्रिय रहेली। एह संकलन में इनकर इगारह गो कविता बाड़ीन स। 'मइया के गीत' से शुरू करत बारी, 'मइया के अंचरा, माटी के गगरा, सोने के बसरा, भरले जियरा, हम पूजत बानी हो!' लइकी की पढ़ाई पर 'बबुनी के गुहार' कविता बा, 'हमहूं पढ़ब–लिखब सुन ल गुहार ए बाबा, ला द पो. थी–पतरा खोल द स्कूल के दरवाजा'। इनकर एगो कविता बा 'बरखा भेजीं भगवान'।
'सूखल बा खेत खलिहान,
सूखल पनघट, कुआं, धान।
ढेंकी में अब कुटाई का
सब मेहनत होई जियान'।

'अमवा मोजरइले सखी !' में एक तरफ 'अमवा मोजरइले सखी ! कोयलिया के कूक सोहा ला' लिखत बाड़ी आ एकरे अंत में लिखत बाड़ी 'बरखा के बरसेला जब लरी,
सजनवां से जुदाई ना सोहाला'।

गीता चौबे 'गूंज' भोजपुरी में लिखबो करेली आ गइबो करेली। एह किताब में इनकर दस गो कविता संकलित बिआ। सरसी छंद में कविता बा,
'सुंदर मंद समीर बहेला,
मन के लागे नीक।
बड़ा मगन तरुवर झूमेला,
वन में गावे पीक।'

'दुखियन के दुख में शामिल, जिनगी ई जीयल कर, एगो बात कहे गीता, खुश हरदम रहल कर।'

इनकर चौपाई बा 'बरखा रानी',

'लइकन के भी नीमन लागे,
बिरहि जिया में अगिया लागे।
अलगे–अलगे माने होवे,
केहू हंसले, केहू रोवे।'
गजल देखल जाओ,

'कबो हमरा जरूरत बा कबो तहरा जरूरत बा,
सभे ई जान ली बतिया इहां सभका जरूरत बा।'
'सूखत नइखे घाव दिल चीर के देखाई कइसे,
दिल प के लिखल नांव उनकर मेटाईं कइसे।'

(बड़ा रे हुलसी के हम नेहवा लगवनी)।

निर्भय 'नीर' शिक्षा–प्रशिक्षण से जुड़ल बानी। एह किताब में उनकर दस गो कविता बिआ।

'छूटऽत छूटऽत खिंचीं, चटकेला छाती,
मटिया के गंधवा से भेजे रोज पाती'
(उठेला बड़ी हूक)।

मन पर एगो बड़ा नीमन कविता बा, '
कहवाँ गइल', 'केकरा से कहीं मन टोही लावे,
सभे अझुराइल, केहू कहाँ धावे।
खोजि थाकि गइले घर बनवा रे,
कहवाँ गइल मोर मनवा रे'।

मन पर दोसर कविता बा 'मन के मुनरवा',

'हमरा मन के मुनरवा हेरा गइलें हो,
झटके में हियरा दुखा गइले हो।'

'बिरहिन' के बिरह से मन झंझोरा जात बा,
'डेहरी पर बरत दीया बूता देली चिटुकी से,
अँजोर के भगाई ऊ अँधार के बोलावेली।
धनके धरती छाती, मिलन बिरहवा क,
हँसत–रोअत हिया गोदी दुलरावेली।'

'अंजोरिया' में देखल जाओ,

'चाँदनी बिछल चदर नियन डगर बथान में,
चाँद मुस्कुरा रहल विभोर आसमान में'।

पुष्पा पाण्डेय जी के दूगो सोहर, एगो झूमर, चार गो भजन भक्ति भाव से भरल बा। एगो कोरोना पर आ एगो आजादी पर कविता बा।

'भोर भइले बोलले चिरइयाँ,
उठ कन्हइया देखना।
बछड़ा भइल बा बेहाल,
उठ कन्हइया देखना'
(भोजपुरी भजन)।

दिव्येन्दु त्रिपाठी दोसर कविअन के कविता भोजपुरी में भावानुवाद क के भोजपुरी के भंडार भरत बाड़न। ओकरा अलावे इनकर कविता 'गाँव के गाँव रहे दीं भइया !' के कुछ पंक्ति बा

'गांव के गांव रहे दीं भइया,
भूँइ प पाँव रहे दीं भइया।
आम न महुवा कुछुओ बा अब,
नीम के छाँह ना कहुँओ बा अब।
गीत–गवनई के रंग ना बा,
प्रेम–नेह ना केकरो अंग बा।'

ललन राय के 'सावन' कविता में मौसम के फुहार बा,
'देखऽ पनियाँ के पड़ेला फुहार सजना !
लेके आइल बा सावनवाँ बहार सजना'।

इनकर आउर कवितन के नाँव बा 'झारखण्ड', 'परदूषण', 'ओरहन' आउर 'वातायन'।
'केहू नइखे सींचे में,

सभे बाटे खींचे में।
जनता डूबल जाति में,
देश मिलल माटी में।'

'भोजपुरी बालगीतः एक सांस्कृतिक मूल्यांकन' के लेखिका डा0 स्वर्ण लता के 'हाइकु' 'मन कुंठित, इक्कीसवीं सदी में, नारी बेचारी।' आ 'प्रेम प्रतिमा, नख से शिख तक, नारी स्वरूप' के साथहीं 'सेनेरयु' देखल जाओ,

'नारी अस्मिता
आज, लुटाता,
दिने दुपहरिया',
अमावस जिनगी,
उम्मीद, चाँद झांके अँगना'।

इनकर तीन गो आउरि रचना बाड़िन स 'आजाद कब होखब?' 'हमार पहचान हऽ ' आ 'कजरी'।

किताब के अंत में वन प्रमंडल पदाधिकारी पद से सेवानिवृत्ति के बाद भोजपुरी के सेवा में जी–जान से लागल आउर एह किताब के संपादक श्री कनक किशोर जी के कविता बाड़ीन स, 'गंगिया', 'पेट', 'निकाह कुबूल बा', 'कुछ बुझाइल', 'प्रवासी चिरई' आ 'किशोर के कविता'। '

हमार संगम,
हमार हरिद्वार,
गाँव के दखिन बधार में बहत,
गंगिया ह,
रोज डूबकी मार आइना,

भोजपुरी साहित्य:हाल–फिलहाल प्रो. बलभद्र के आलोचना–दृष्टि

जितेन्द्र कुमार,

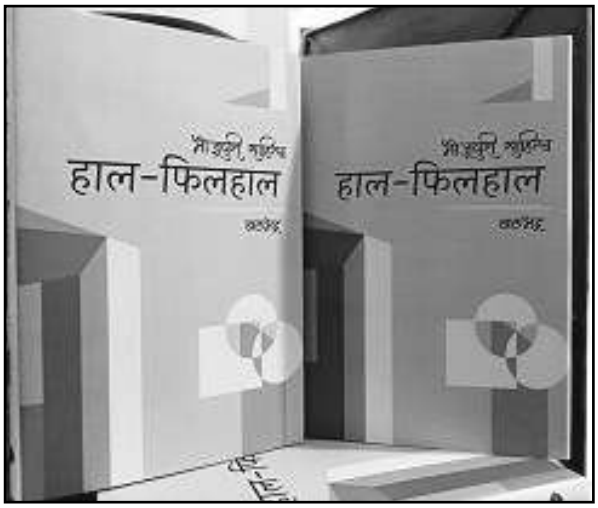

भोजपुरी साहित्य में आलोचना विधा विक. ासशील बा।भोजपुरी आलोचना में मैदान खाली बा।एह दिसाईं ढेर परती–पराँत बा।एह दिसाईं बहुते मेहनत के दरकार बा।एह स्थिति में सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली द्व ारा सद्यः प्रकाशित डॉ बलभद्र के आलोचना पुस्तक''भोजपुरी साहित्यःहाल–फिलहाल''भोजपुरी आला. ेचना विकसित करे के दिसाईं उल्लेखनीय कृति बा।माईभाषा में शिक्षा के जरूरत अब राजपाट भी महसूस कर रहल बा।5अगस्त,2021के द हिंदू में उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू के माईभाषा में शिक्षा के महत्व के प्रसंग में एगो लेखः''ए लैंग्वेज लैडर फॉर एन एडुकेशन रोडब्लॉक'' (शिक्षा मार्ग खातिर शि क्षा के सीढ़ी)प्रकाशित भइल बा।तकनीकी शिक्षा के अ खिल भारतीय परिषद् के फैसला बा कि नयी शिक्षा नीति के तहत एगारह राज्यन में बी. टेक प्रोग्राम माईभाषा में होइ।माने माईभाषा के महत्व उपरी स्तर पर बुझा रहल बा।राजनीतिक आजादी त मिलल, भाषाई औपनिवेशिक मानसिक गुलामी से आजादी बाकी बा।. चीन में उच्च शिक्षा मंडारिन भाषा में संभव बा, भारत में ना।जापान में जापानी, रूस में रूसी, जर्मनी में जरमन, फ्रांस में फ्रेंच भाषा में उच्च शिक्षा देल जा रहल बा, अँग्रेजी के वोहिजा कामे भर काम बा, बाकी भारत में राजपाट पर अँग्रेजी लॉबी हाबी बा।

भोरे भोर, किरिनियां के धरती चूमे के पहिले'
(गंगिया),

'पेट, हमरो बा,
रउवा जइसन ना,
छोटी चुकी,– –
तवनो पर, पेट भरे के,
जोगाड़ ना हो पावेला,
भूखे अंतड़ी धुँआत रहेला,
पेट सोन्हात रहेला'

(पेट),

'राउर संयुक्त परिवार रहे,
आपन गाँव रहे,
खेत खरिहान रहे, – –
काकी इया के हाथ रहे,
भऊजी के दुलार रहे – –
आइल आज एकल परिवार,
बीबी, मियां संग एगो लइका,
शहर छोड़ ना गइल गाँव,
काका काकी के ना जनलस,
बाबा दादी के ना पहचनलस – –'

(कुछ बुझाइल)।

एह किताब में गजल, हाइकु, सेनेरयु, भजन, चौता, कजरी, सरसी छंद, कुकुभ छंद, चौपाई, घनाक्षरी, सोहर, झूमर से लेके दोसर भाषा के भावानुवाद तक समाहित बा। एगो आउर बात बा कि एह किताब में नौवाँ दसक से ले के पां. चवा दसक तक के कविअन के एक साथ पढ़े के मवका मिल जा रहल बा। एकरा में आउरि बिशेषता बा, जे पढ़ले पर बुझाई।

❑❑

8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल,
नामकुम, रांची (झारखण्ड)–834 010

अपना माईभाषा के उन्नयन के दायित्व भाषा विशेष के लेखक का प्रकाशक आ पाठक के बा।एह दृष्टि से प्रो. बलभद्र के सद्यः प्रकाशित पुस्तकः''भोजपुरी साहित्यः हाल–फिलहाल''के स्वागत होखे के चाहीं।

उल्लेख्य पुस्तक के विषय–वस्तु

कवनो साहित्य फलक बहुत विस्तृत होला जवना में कविता, कहानी, उपन्यास,लघु उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, डायरी, संस्मरण, यात्रा–संस्मरण, व्यंग्य, समीक्षा, आलोचना, रिपोर्ताज आदी सबकुछ समाहित बा।''भोजपुरी साहित्यः हाल–फिलहाल''में आलोचक डॉ बलभद्र अपना के भोजपुरी कहानी से कविता तक के विवेचना तक सीमित रखले बाड़न।अपवाद स्वरूप एगो लघु उपन्यास के चरचा बा आ एगो कथेतर गद्य पर लेख समाहित बा।इ एगो पुस्तक के सीमा भी हो सकेला।

विवेचित पुस्तक में मात्र 25 गो आलेख संकलित बा।भोजपुरी कहानी विधा पर मात्र छव गो आलेख बा।''भोजपुरी कहानी के फिलहाल''एगो उल्लेखनीय आलेख बा जवन पहिला आलेख बा।एह में अनेक भोजपुरी कहानियन के विश्लेषण बा।किताब में कवनो भूमिका नइखे।'भोजपुरी के महिला कहानीकारन के कहानी 'दूसर लेख बा।बाकी'कथा गइल बन में'प्रेमशीला शुक्ल के कहानी–संग्रह'जाए के बेरिया'के भूमिका ह।'गाँव के भीतर गाँव'के बारे में''वरिष्ठ कथाकार अशोक द्विवेदी के कहानी–संग्रह के समीक्षा ह जवन'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'के फरवरी–मार्च, 2000अंक में प्रकाशित रहे।दू दसक से बेसी हो गइल एह कहानियन के रचना भइला।'कहानी में सवाल–जबाब के तर्ज में'कथाकार सुरेश काँटक के कहानी–संग्रह'समुंदर सुखात बा'के समीक्षा ह जवन'समकालीन भोजपुरी साहित्य के अंक–17में, सन्2002में छपल बा।एगो आलेख'बटोहिया'के कहानी अंक के समीक्षा ह जवन'पाती'के जनवरी–मार्च,1997में प्रकाशित बा।माने24बरिस पहिले के कहानियन के समीक्षा।आलेख'बेओरचले ना खटिया काम जोग ना कहानी', 19–20 सितंबर, 2015 के भोपाल (मध्यप्रदेश) में भोजपुरी साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित कार्यक्रम'भोजपुरी कहानीःपाठ एवं विमर्श'पर रपट ह जवना में डॉ बलभद्र शामिल रहन।अइसे त भोजपुरी कहानी के इतिहासे 1948से शुरू होता, त एह में जे बा तवन सब हाले फिलहाल के बा।

रामनाथ पाण्डेय के'बिंदिया'1956में छपल रहे।इ भोजपुरी के पहिला उपन्यास ह। भोजपुरी कथा साहित्य के उद्भव विकास'नामके लेख में वरिष्ठ साहित्यकार कन्हैया सिंह'सदय'सन् 2010 तक 53गो भोजपुरी उपन्यासन के सूची पेश कइले बानीं जवना में भगवती प्रसाद द्विवेदी के लघु उपन्यास 'साँच के आँच'भी शामिल बा।विवेच्य पुस्तक में इहे एगो उपन्यास के समीक्षा शामिल बाः'कवन दिशा में'।भोजपुरी साहित्य के हाल फिलहाल के संदर्भ में विशेष तौर पर उपन्यास विधा में इहे एगो उपन्यास के चरचा के औचित्य नइखे बुझात।इ आलोचक के व्यक्तिगत मजबूरी हो सकेला आ सिस्टम के व्यवस्थागत दोष भी।

भोजपुरी कविता के संदर्भ में एगारह गो छोट–बड़ लेख–समीक्षा किताब में संकलित बाः कविता के भीतर के बतकही, भोजपुरी कविताःसाँच कहे के बान, भोजपुरी जनगीत, मोती बी ए के काव्य–दृष्टि, किसान कवि बावला, पी चंद्रविनोद के गीतःतनी गुनगुनात, गीत में परिवेश के आलाचनाःजतने मुखर ओतने मौन(आनंद संधिदूत),बृथा नइखे व्यथित के व्यथा (बैजनाथ दुबे'व्यथित'), शारदानंद जी के'बाकिर',कन्हैया पाण्डेय की कविताई,'कविता 'के गजल अंक के समीक्षा।एह छोटहन सूची में सात गो लेख सात गो प्रिय कवियन के कविता–संग्रहन के समीक्षा बा एह सात कविता–संग्रहन के समीक्षा से भोजपुरी कविता के हाल फिलहाल के तसवीर उभरल मुश्किल बा।भोजपुरी भाषा के प्रति राजपाट के रवैया अनुकूल नइखे, तबो एह विपरीत परिस्थितियन में भोजपुरी आलोचना संसार के फलक के विस्तार देवे के डॉ बलभद्र के संकल्प सराहनीय बा।ऊहाँ के हिंदी आ भोजपुरी दूनों मोरचा पर सक्रिय बानीं जइसे डॉ विवेकी राय जी(जनमः19नवंबर,1924,निधनः22नवंबर,2016)हिंदी भोजपुरी दूनों में समभ्यस्त रहीं।आजो कुछ वइसन नाम बा।

डॉ बलभद्र के आलोचना–दृष्टि

आलोचक डॉ बलभद्र के संवेदना मे. हनतकश भूमिहीन किसान आ मजूर वर्ग के साथे विशेष बा।उनुकर जुड़ाव आ लगाव भोजपुर के क्रांतिकारी किसान आंदोलन से रहल बा।भारतीय संविधान में समाजवादी समतावादी लोकतान्त्रिक गणराज्य के स्थापना के सपना के अंगीकार कइला के बादो ना जमींदारी मेटल ना सामंती प्रवृत्ति मेटल।पुरनका सामंत बड़ले बा तबले नवका सामंत परिदृश्य में आ गइल।बलभद्र के दृष्टि में रचनात्मक साहित्य के ऐतिहासिक कार्यभार बा जे ऊ एह सामाजिक–राजनीतिकयथार्थ के संदर्भ में साहित्य के हर विधा में रचना करे।एह तरह के रचनाशीलता डॉ बलभद्र के भोजपुरी कथाकार सुरेश काँटक, अशोक द्विवेदी, तैयब हुसैन'पीड़ित', भगवती

प्रसाद द्विवेदी, कृष्णानंद कृष्ण, रामदेव शुक्ल, रमाशंकर श्रीवास्तव(दिवंगत),डॉ कमलाकर त्रिपाठी, रामलखन विद्यार्थी,),प्रकाश उदय, जितेन्द्र कुमार, सुमन कुमार सिंह, अनीश श्रीवास्तव, आदित्य नारायण आदी के कहानियन में मिलत बा।आलोचक के मोताबिक उपरोक्त कहानीकारन के कहानियन में किसान–संघर्ष के चेतना बा।बलभद्र भारतीय समाज में स्त्री उत्पीड़न से मर्माहत बाड़न।कथाकार अशोक द्विवेदी के कहानियन में स्त्री उत्पीड़न के परदाफाश बा।. उनुकर'पोसुआ'कहानी में सामंती उत्पीड़न के दास्तान बा।सुमन कुमार सिंह के'घनचक्कर'कहानी में एगो स्त्री–पक्ष बा।विष्णुदेव तिवारी के'गुरिया साहु के गाँव'में स्त्री पक्ष बा।कवि–कथाकार प्रकाश उदय के लमहर कहानी'कथा सतनैरना के आठवाँ अध्याय'में विधवा पंडिताइन के अद्भुत आधुनिक चरित्र बा।सवर्ण समाज के विधवा पंडिताइन मुक्त नारी चेतना के प्रतीक बाड़ी।उ सामंती परिवेश के चउकठ लाँघ के तथाकथित अछूत श्रेणी के स्त्रियन संगे उठ बइठ करत बाड़ी।

डॉ बलभद्र के आलोचना के एगो खूबी बा कि ऊ भोजपुरी आलोचना के झाल बजावेवाली आलोचना के अतिक्रमण करत बाड़न।रचना में कतहीं कथ्यगत झोल झाल बा त उ बेहिचक रेखांकित करत बाड़न, कथाकार उनकर सुपरिचिते काहे ना होखसु।विष्णुदेव तिवारी के'गुरिया साहु के गाँव'कहानी से बेसी बढ़िया उनुकर कहानी'ओरचन के खटिया'लागतबिया काहे कि ऊ'व्यवहारिक'बिया।हालांकि ऊ बतावत नइखन कि कहानी में व्यवहारिकता का होला?'गुरिया साहु के गाँव के शिल्प उनका कोलाज जइसन लागता।कथा शिल्प में ऊ नया प्रयोग के पक्षधर नइखन।जनवादी चेतना के आलोचक प्रयोग से काहे घबरात बा?इ बात बा कि कहानी भा कविता के विश्लेषण बेबाक ढ़ंग से करत बाड़न, कवनो लल्लो–चप्पो ना।दिवंगत कृष्णानंद कृष्ण के चर्चित कहानी'कालो दी'के बारे में बलभद्र के टिप्पणी बा:'कालो दी के हत्या के बाद, मठ के ढहते ई पुरा संघर्ष पता ना कहवाँ दो उधिया–विला जात बा।जबकि बिहार में, भोजपुर में अब एह तरह के आंदोलन के आपन एगो जनाधार बा, निरंतरता बा।एह कहानी के मूल में संघर्ष कम समझौता जादे बा।'उनका कथाकार बरमेश्वर सिंह के कवनो कहानी पसंद नइखे।प्रो ब्रजकिशोर के कहानी'एगो आउर अभिमन्यु'नक्सलवादी गंभीरा साव के पुलिस हिरासत में मौत पर आधारित बा।बाकी इ कहानी के उल्लेख बलभद्र नइखन करत।

बलभद्र लिखत बाड़न:'भोजपुरी में साँच कहल जाए त, कहानी के कमी बा उहो में बढ़िया कहानी के त आउर (पृष्ठ25)।'उ आगे लिखत बाड़न:'रचनाकार खातिर ई जरूरी होला कि ऊ बद्धदायरा के बाहर आवे'।बद्ध दायरा'के ऊ व्याख्यायित नइखन करत।एगो अस्पष्टता 'रहि जाता।लव शर्मा प्रशांत के कहानी'दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गयो रे'पर बेधक टिप्पणी बा।ओकरा बरक्स नरेन्द्र शास्त्री के कहानी 'कुजतिहा' सार्थक बिया। अंकुश्री के कहानी 'कनफूल' सफल कहानी बिया। रामदेव शुक्ल के कहानी'तिसरकी आँख के अन्हार','जरसी गाय के बछरू','सुग्गी'पर सकारात्मक टिप्पणी बा।

विवेच्य पुस्तक में'भोजपुरी महिला कथाकारन के कहानी'पर एगो अलग से आलेख बा।एह में रूपश्री, प्रेमशीला शुक्ल, चंद्रकला त्रिपाठी, चंद्रमुखी वर्मा, उषा वर्मा, डॉ मधु वर्मा, मधु वर्मा, आशा श्रीवास्तव, आशारानी लाल, नीहारिका, सीमा स्वधा, इलारानी गुप्ता, शांति देवी, किरण श्रीवास्तव, उषारानी मिश्र, सुमन सिंह के कहानियन के सार्थक विश्लेषण बा।।

कविता खण्ड में''कविता के भीतर के बतकही''आ''भोजपुरी कविता:साँच कहे के बान''आ''भोजपुरी जनगीत''उल्लेखनीय बा।एह सब में भोजपुरी के आदि कवि कबीर, आधुनिक कवि भिखारी ठाकुर, रमाकांत द्विवेदी रमता, रघुवीर नारायण, दुर्गेन्द्रअकारी, तैयब हुसैन'पीड़ित',विजेन्द्र अनिल, गोरख पाण्डेय, प्रकाश उदय, हरीन्द्र हिमकर, चंद्रदेव यादव, सुरेश काँटक, आनंद संधिदूत के विस्तृत चरचा बा।

आलोचक बलभद्र के प्रतिपादन बा कि'भोजपुरी कविता के पहचान एक लेखा गाँव के कविता के रूप में बा।.....भोजपुरी कविता सही माने में रिश्ता–नाता के कविता ह, ओकर स्पष्ट उचार(पृष्ठ62)आसिफ रोहताश्वी, सुरेन्द्र कुमार सारंग, कमलेश राय, उदय प्रताप हयात, अक्षय कुमार पाण्डेय, मिथिलेश गहमरी, जितेन्द्र कुमार, आदी कवियन के उल्लेख बा।कवि के कवितन के प्रवृत्तियन के विश्लेषण नइखे।

भोजपुरी जनगीत के प्रसंग में डॉ बलभद्र के कथन बा कि''जनगीत वाम जनवादी राजनीति के सांस्कृतिक अभियान के जरूरी हिस्सा ह।.... पहिले से जवन गीत, लोकगीत रहे, तवना के नया दिशा, चेतना आ एगो अभियान मिल गइल।' 'भोजपुरी साहित्य:हाल–फिलहाल''के प्रस्तुति दू खंड में रहीत––(1)कहानी खण्ड,(2)कविता खण्ड–त आऊ शानदार होइत।दूनों तरह के लेखन के घालमेल अखरत बा।तबो घीव के लड्डू टेंढ़ो भला।

एह पुस्तक के प्रकाशक सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली आ ओकर समन्वयक युवा लेखक केशव मोहन पाण्डेय जी के अवदान भुलाइल ना जा सके। उम्मीद बा डॉ बलभद्र के एह किताब के भोजपुरी संसार स्वागत करी।

❑❑

मदन जी के हाता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

पचरा गाइब

चार दिना के चरफर बानी
चपर चपर बतिआइब।
बाबू पचरा गाइब।

इनकर चुगली उनकर चुगली
गंगा भोर नहाइब।
बाबू पचरा गाइब ।

इनसे पूछब उनसे जाँचब
रोजे सभके कमतर आँकब
अगमजानी कहाइब।
बाबू पचरा गाइब।

जाई चउथ क चान निहारब
अपना सवत क पाँव पखारब
तब सजन लगे जाइब।
बाबू पचरा गाइब।

झूठ साँच कबहूँ न सकारब
समय देखि के रोआं झारब
दोसरा बिल समाइब।
बाबू पचरा गाइब।

इनके नीक ह उनके बाउर
घरवें जाइब बाँटब पाहुर
हम खोइची कमाइब।
बाबू पचरा गाइब।

कतहूँ टोअब कुछो चबाइब
कहते–सुनत सबूत जुटाइब
डी एन ए जंचवाइब।
बाबू पचरा गाइब।

❑❑

○ गाजियाबाद ,उ0 प्र0

सविता गुप्ता

बेना

बीना देवी नयकी कनीया तनु के काल्हे कह देले रही कि भोरे उठके नहा लिहअ३त उ साँस के उठेके पहलही तैयार होके बइठल रही।
"आरे !बाह तनु तू त नहा ले लू त अइसन करअ चौउका में तरकारी बना लऽ३शुद्ध घीव में बनइहऽ३आज नहाय खाय बा सब चीज घीव में बनी।"
"अच्छा मम्मी जी।"
तनु के पहिला वट सावित्री पूजा रहे।उहो नेम टेम से करें चाहत रही३माई के सिखावल गाँठ पार लेले रही।
फुफुआ सास आपन भइया से कनफुसियात रही–"भाभी ,बाड़ा भागमान बाड़ी पढ़ल लिखल कनियामिलल आ ओकरा पर ऐतना सउर वाली३।"
"हाँ !हो दीदीया ठीके कहऽतडू३"
बीना देवी पूजा के सामान के लिस्ट पकड़ा के तनु के बोलली "जाके बाजार से इ सब कल वटसावित्री के पूजा के सामान ले ले आवऽ।"
बर के पेड़ पर तनु ,बीना देवी दुनो सास पतोह पूजा करके धागा बाँधे के समय तनु धागा के एगोटुकड़ा रख के गोड़ लगऽली त बीना देवी इशारा कइली सात बार बाँधे के होला३तनु अनसुना करकेएके ओरी खाड़ा हों गइली।
३तनी देर में बीना देवी आके पुछली कनियाँ बेना काहां बा?
"बेना हम ना किनली मम्मी जी"
"काहे?"बीना देवीआँख तरेर के पुछली।
बीना देवी के सखि भी पूछे लगऽली "जाऽ कनिया उ तऽ जरूरी रहे३"
तीन चार गो मेहरारू लोग भी हाँ में हाँ मिलवली३
तनु जरिको ना घबरवली आऽ सबके समझवली कि "देखीं मम्मी जी पहिले के जमाना में बिजुली नारहे तऽ बेना हाँके के जरूरत रहे३अब तऽ गाँव में बिजुली आ गइल बा तऽ साले साले बेना किन केजामा करके का जरूरत बा।"
"घर में पंखा चला के रसम हो जाई३"
इ सब सुनके फुफुआ सास बोललीं३
"बाह!कनिया बाड़ा बढ़िया उपाय बतऽउली हो।"
तनु ,कनखिया के सास के मुँह देखली तऽ उहो कहली ठीके बा कनिया३कई गो बेना घर में पड़ल बाजेकर जरूरतें नइ खे।

❑❑

○ राँची/झारखंड

मनोज भावुक

102 बरिस के हो गइनी भोजपुरी के बेजोड लोकगायक जंग बहादुर सिंह

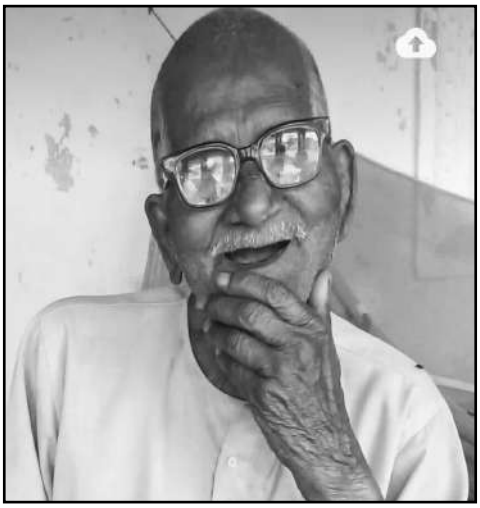

अगर समय के कागज पर ना उतारल जाव त ऊ हवा हो जाला आ हवा के बात केहू पतियाला ना। ना लिखइला से, ना रिकार्ड भइला से बहुत सारा दिग्गज लोग के कहानी गुमनामी के गर्त में समा जाला। आज हमनी के हाथ में इतिहास उहे बा जवन कहीं गुफा–कन्दरा में भित्ति चित्र के रूप में उकेरल गइल, कहीं कलाकृति के रूप में माटी में धँसल मिलल, कहीं भोजपत्र, कपड़ा भा कागज भा देवाल पर लिखल पांडुलिपि के रूप में भेंटाइल भा मुँहामुही मुँहजुबानी एक जेनरेशन से दूसरा जेन. रेशन होत मिर्च–मसाला मिलत कसहूँ बाँचल रह गइल। कहे के माने जवन लिखाई भा सहेजाई, उहे इतिहास बनी आ सदियन तक जीवित रही। जवना के कवनो रिकॉर्ड ना रखाई, ऊ पहिले के होखे चाहें वर्तमान के, कबो खतिहान ना बन पाई। जबले इंसान आ ओह दौर के लोग जियत बा तबले त ऊ स्मृति में रही बाकिर जदि उ किंवदंती में, लोक–कथा में आगे ना बढ़ल त असहीं बुता जाई जइसे रेत पर बनल कवनो चिन्हासी एगो लहर के अइला के बाद मिट जाला।

भोजपुरी लोक गायकी के इतिहास में अइसन बहुत गायक भइलें जेकर ना त कवनो कैसेट रिकॉर्ड भइल, ना कवनो ऑडियो–वीडियो बा, ओह में से बहुत लोग मरियो–बिला गइलय जेकर केहू नाम लेवा नइखे। दू चार लोग जीवित बा त ओह लोग के आर्काइव करे के जरूरत बा। आज हम बात करत बानी भोजपुरी के लोक गायक जंग बहादुर सिंह के जे साठ–सत्तर के दशक में झरिया, धनबाद, आसनसोल धइले कलकत्ता ले अपना गायकी से हलचल मचा देले रहलें। आयोजक लोग के पोस्टर पर इनकर उपस्थिति ओइसने रहे, जइसे जलेबी के साथे सजाव दही के छाल्ही।

कुश्ती के अखाड़ा के साथे सुर के दांव पेंच में माहिर रहलें जंगबहादुर सिंह

सिवान के रहे वाला जंगबहादुर सिंह के जन्म 10 दिसंबर 1920 के भइल। 102 बरिस के अवस्था में भी टनकार आवाज रखे वाला जंगबहादुर बाबू के जवानी कुश्ती अउरी गायकी में गुजरल। जंगबहादुर सिंह भैरवी आ रामायण के ओ बेरा के बेजोड़ गायक रहलें। पहिले त खूब शारीरिक वर्जिश भइल आ कुश्ती में पहलवान के ऊ धोबिया पछाड़ ि खयवलें। बाद में जब लोक गीत गवनई के नशा चढ़ल त फेर आपन भारी अउरी ऊंचा स्केल वाला आवाज में एक से बड़ एक प्रसंग आधारित गायकी से लोग के मंत्र मुग्ध कइलें। जंगबहादुर सिंह के ई सवख अइसन रहे कि एगो गोड़ आसनसोल, सेनरैले साइकिल फैक्टरी में रहे त दूसरा गाँवे। गाँवे माने कौसड़ सीवान। ऊ आसनसोल में तब नौकरी करस। आज जेंगा गायक लोग यूट्यूब, डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर गा के भा लाखों लाख रुपया कॉन्सर्ट के लेके राजा अउरी सिलेब्रिटी स्टेटस पा लेता लोग, तब अइसन ना रहे। तब स्वांतः सुखाय गीत–गवनई होखे। केहू केहू ओकरा खातिर नेग में कुछ दे देव त ऊ बड़ कमाई मानल जाव। बाकिर ताली, वाहवाही से ही पेट भरे के पड़े।

जंगबहादुर बाबू के प्रसिद्धि बढ़ल त आसनसोल के आस–पास के एरिया झरिया, धनबाद, बोकारो में महफिल जमे लागल। बाकिर उनकर गायन प्रोफेशनल ना रहे आ ना ही ऊ कैसेटिया युग (कैसेट कंपनी के युग) रहे।

रहे। एह से गायन से आमदनी के रूप में वाहवाही आ तालिये भर रहे। नोकरी–चाकरी से तेरहे–बाइस। बाद में परिवार के बोझ, जिम्मेवारी के एहसास आ पइसा के जरूरत उनका के गायन से

दूर करत गइल। अइसे त भोजपुरिया समाज के अधिकांश प्रतिभा के सारांशतः इहे दास्तान बा कि ऊ रोजी–रोटी यानि कि नोकरी–चाकरी के बलि–बेदी पर अपना प्रतिभा या शौक के आहुति दे देले बाड़न। बाकिर बाबू जंग बहादुर सिंह के साथे एगो आउर मजबूरी रहे। गला आ आँख के तकलीफ के कारण डाक्टर के मनाही। बाबू जंग बहादुर सिंह जब टाँसी लेस त माइक के बिना हीं आसपास के चार गाँव में आवाज गूँज उठे। खास क के भैरवी गायन में त समा बान्ह देस। आजो, उम्र के एह ढलान पर भी उनकर आवाज आ राग–सुर–लय पर पकड़ देख के सहजे यकीन हो जाला।

जंगबहादुर बाबू के समकालीन कुछ लोक गायक आ व्यास लोग के नाम बा बच्चू मियाँ, बच्चन मिसिर, वीरेंदर सिंह (छपरा), वीरेंदर सिंह धुरान (बलिया), राम इकबाल जी (गाजीपुर), तिलेसर जी (आरा), रामजी सिंह व्यास (बलिया), गायत्री ठाकुर, श्रीनाथ सिंह आ नथुनी सिंह। अपना दौर के प्रसिद्ध अउरी हर एक के जुबान पर रहे वाला ई गायक लोग में से अधिकांश लोग स्वर्गवासी हो गइल बा अउरी जे जीवित बा ओकर भी उम्र सौ के लगे पहुँच रहल बा। ए में से कुछ लोग के गावल गीतन के रिकॉर्डिंग भइल बा, कुछ लोग के प्रोग्राम के वीडियोग्राफी के यूट्यूब पर आर्काइव भी कइल जाता। बाकिर जदी बिहार के कला अउरी संस्कृति विभाग अप. ना संसाधन के इस्तेमाल करके शोध करके, ढूंढ के एह सब के जुटावे जइसे असम, गुजरात जइसन राज्य में हो रहल बा त का बात रहित।

जंगबहादुर बाबू बतावेनी कि जब उहाँ के तीस–चालीस बरिस के रहीं त ओह टाइम जब गाना गावे लागीं त लोग पर्ची लिख के भेजे कि खाली गावहीं के नइखे, कुछ पोज भी देखावे के बा। गावे में एतना आनंद मिले कि ओह में डूब जाईं। गावत में एक्शन में रहीं।

लोक गायक भरत शर्मा व्यास आ भारतीय हॉकी टीम के कोच हरेन्द्र सिंह भी जंगबहादुर बाबू के गायिकी के मुरीद रहीं भारतीय हॉकी टीम के कोच हरेन्द्र सिंह बतावेनी कि " मै खुशनसीब लोगों में से हूँ कि मैंने बचपन में अपने गाँव बंगरा, छपरा में जंग बहादुर बाबू का चइता सुना है और उन्हें अपनी आँखों से देखा है। गाते समय झाल बजाने की उनकी कला का मुरीद हूँ मै। "

सुप्रसिद्ध भोजपुरी लोक गायक भरत शर्मा व्यास जी तब गायिकी के शुरुआते कइले रहनी। उहाँ के ओह समय के याद करत भावुक होके कहेनी कि "सबसे पहिले हम गायक जंग बहादुर बाबू के प्रणाम करत बानी काहे कि हमनी से सीनियर रहनी आ ओह जमाना के अपने आप में एगो उहाँ के नाम लिहल जात रहे गायिकी में। जब कलकत्ता से हम आईं कोलफील्ड में आ जब मिलीं उहाँ से त हमार आ उहाँ के गाना–बजाना होखे। ओह घरी उहाँ के अतना बढ़िया गाईं, खासकर के भैरवी कि का कहीं। ३. आ सबसे खुशी के बात ई बा कि पुरनका गायक लोग में सब केहू चल बसल आ जंग बहादुर बाबू सौ बरिस के उमिर में भी स्वस्थ बानी।

गायिकी लाइन में कइसे अइनी? 33 एह सवाल पर जंगबहादुर बाबू एगो रोचक घटना के जिक्र करेनी "एक जगहा एगो व्यास पर दूगो व्यास भीड़ल रहलें। हमरा से ना देखल गइल त जे व्यास अकेले रहलें उनका ओर से हमहूँ कुछ कढ़ावे लगनी। अपोजिट पार्टी के दुनों व्यास जी लो के बुरा लागल। ऊ लोग हमरे इलाका के रहे लोग। बाद में चौलेन्ज हो गइल कि ओह लोग के हरावे के बा। त अउरी रियाज में डूब गइनी। गवनई में त कई बार अइसन भइल बा कि राम इकबाल जी, तिलेसर जी आ रामजी सिंह व्यास एक साइड से आ हम एक साइड से। कई बेर ! ओह लोग के देख के हमार हिम्मत आउर बढ़ जाव। आ जब तीन पर भारी पड़ी आ लोग के ताली बाजे त पूछहीं के ना रहे।"

कथा–कहानी बतावत–बतावत जंग बहादुर बाबू गाना गावे लागत बानी– "हमनी के हईं भोजपुरिया ए भाई जी / अखाड़ा में जाइले, मेहनत बनाइले, कान्हवा प मली–मली धुरिया ए भाई जी''

फेर अपना पहलवानी के दिन के बात मन पारे लागत बानी– " हम शरीर के बड़ा छोट बाकिर लड़े के खूब शौक रहे त कलकत्ता आ कोलफील्ड एरिया में लड़े लगनी। लोग कही कि हम बनारस के नन्हकू जी लेखा लड़ी। तीन कुंतल के पहलवान से भी हम लड़ल बानी। तब दू हफ्ता में तीन किलो बेदाम खाके रोज हजार गो दंड–बइठक मारी। सामने वाला पहलवान बलवान रहलें बाकिर लड़े खातिर कायदा आ फूर्ती नू चाहीं। पहलवा. निये प हमार नोकरी लागल रहे। कोलफील्ड एरिया में हमरा भाई मजदूर नेता रामदेव सिंह के बॉस हमरा के कुश्ती चौलेंज खातिर भर्ती कइले रहलें बाकिर हमार छोट देह आ सामने वाला पहलवान के तीन कुंतल के देह देख के घबड़ाइल रहलें। उनका हमरा प भरोसा ना रहे। खैर, सामने वाला पहलवान के तीन–तीन आदमी जांघिया चढ़ावे। बंगलिया कहेसन कि बाबा रे बाबा, ई देह पर गिरेगा तो छोटका पहलवान दब के मर जाएगा। बाकिर जब ओह तीन कुंटल वाला के चारो खाना चित्त

क देनी त यूपी–बिहार के लोग खुशी से पागल। हमरा के पूर्वांचल के शेर घोषित क देलस। ओकरा बाद बंगाल में कई जगे हमार दंगल भइल। पार्क सर्कस में भी कई बेर कुश्ती भइल बा।"पहलवानी छोड़ काहे देनी ? के जबाब में जंग बहादुर बाबू बतवनी कि, "ड्यूटी करत पहलवानी कइल मुश्किल हो गइल रहे। ३ आ गायिकी में ज्यादा रस आवे लागल। देखनी कि गायिकी में जिला–जिला के जिल्लावाही होता, दूगोला होता त एहू में दंगले बा। त एह दंगल में हमरा ज्यादा आनंद आवे लागल। रामायण आ देशभक्ति गीतन में हम डूबे लगनी। बलिया वाला धुरान जी के साथे रामायण में कई बार हमार दूगोला भइल बा। रात–रात भर रामायण होखे। पब्लिक के प्यार आ डिमांड बढ़े लागल त मनवो बढ़े लागल। भोजपुरी के कई गो विधा निर्गुण, पुरबी, देशभक्ति आदि गाईं।"

जंग बहादुर बाबू फेर गुनगुनात बानी, "हम हम करेले विचार तोहार फेल बा/झमेल कवना काम के जाए के अकेल बा"

हम पूछनी, "राउर त पढ़ाई–लिखाई भी कवनो खास नइखे। एतना बड़ गाना रउरा ईयाद कइसे रहेला?"

एह से (गायिकी से) एतना ना प्रेम हो गइल रहे आ कुछ माई के कृपा भइल त बस सब होखे लागल। अभियो कवनो कलाकार के, गायक के देखेनी त मन बेचैन हो जाला। एकरा बाद जंग बहादुर बाबू वीर अब्दुल हमीद आ सुभाष चन्द्र बोस जइसन शख्सियत पर गीत सुनवनी। सीता हरण आ कौशल्या हरण पर गीत सुनवनी।

हम पूछनी– एह घरी के गायिकी पर का कहेम? जबाब मिलल– फुहर–पातर ना गावे के चाहीं। हमनी के कबो ना गवनी।

जंग बहादुर बाबू लोक गीत के समुन्दर बानी। बहुत कंटेंट बा उहाँ के पास। सुनला से ओराई ना। लोक गीत के खजाना बा। समुन्दर में से बुझीं जे बस एक लोटा पानी निकलले बानी। बस लोटा भर पानी बा ई बतकही।

अंत में एगो गजल सुनवनी जवन ओह बेरा बड़ा लोकप्रिय रहे –

आईं–आईं हहरला में कुछु नइखे
ए जमाना से डरला में कुछु नइखे

आईं करे के बा तवन कर लीहल जाव
रोजे–रोजे संपरला में कुछु नइखे

एह बातचीत के दौरान उहाँ से बतियावत आ उहाँ के गीत सुनत हम ई महसूस कइनी कि अगर समय पर इहाँ के गायिकी रिकॉर्ड भइल रहित त आज हिन्दुस्तानी गायिकी में जंग बहादुर सिंह एगो गुमनाम नाम ना रहित। ❑❑

❍ भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक

विद्या शंकर विद्यार्थी

अपने घर के कोना में

दूर मार दूर मार काहे होता बुढ़ारी में

अपने घर के कोना में बनवास बाटे
जइसन चाहीं लहू ना अब खास बाटे
हरियर सब्जी लावत रहे त मीठ रहे
पाकिट के रोपेआ प सबकर डीठ रहे
मू गइल आँखी के सबकर पानी बा
ओर छोर ना घोर आत्म ग्लानि बा
अइसनो दिन का आवेला लाचारी के
बूढ़ बाप आ रोअत बीते महतारी के।
गोड़ कमजोर घरे में बिछली खात बा
टिकियो के मोहताज जिनिगी जात बा
बीजे पर हनल बा ताला केवाड़ी में
दूर मार दूर मार काहे होता बुढ़ारी में।

कप में चाय अधो से नीचे आइल बा
पनछुछुर में मीठा तबो भेंटाइल बा
काहे केहू कुफुत लिही कम कह के
पी जाला लाचारी में अलम कह के
सदबिचार के जिनिगी जे बितवले बा
ना केहू के बचनो से ऊ सतवले बा
चुपी साध के अबो ऊ राह देखावता
का करतब ह आदमी के ऊ बतावता
का रखल बा अइसन घर बिगाड़ी में
दूर मार दूर मार काहे होता बुढ़ारी में।

❑❑

❍ रामगढ़, झारखण्ड

पितरपछ

केशव मोहन पाण्डेय

पितरपछ आवते
मन उल्लास से भरि जाला
कि तील, अछत, दूब, कुशा से
थरिया–परात के पानी से
अरघा देहला पर
चाउर–जौ के पिसान के पिंड से
पिंडदान कइला पर
भले बाबुजी, बाबा, परबाबा
नाना, परनाना
ईया–नानीलोग के
ना मिले तर्पन
तऽ का
पितरपछ में निकालल अगरासन
ओह पित्तर लो के भरम में
चेताऽ लऽ कउआ
तऽ का
मन में पलत विश्वास के बिआ
वटवृक्ष बनत रहेला
कि देह छोड़ला पर
हमरो जीव मिली
अपना पितरलोग से
जेमें से
कई लोग के देखलहूँ नइखी हम।

पितरलोग से
मिले के बात
लोग कहेला बेर–बेर।

तब हम
तर्पण के तरीका
ना जनला के बादो
भर के लोटा में दूध भा पानी
चढ़ा देनी
अछत–दूब–तील
उजरका फूल डाल के
पितर लोग के नाम लेत
तीन बेर 'तस्मै स्वधा' कहि के
पितरपछ में। ❑❑

❍ तमकुहीरोड, सेवरही, कुशीनगर

धुआंला ना जेकर चुहानी, ए बाबू

डॉ बलभद्र

आसिफ रोहतासवी के नांव भोजपुरी गजल लिखे वाला ओह लोग में शामिल बा, जे गजल के व्याकरण के भी खूब जानकार बा। उनकर रचनाशीलता के पूरा निचोड़ गजल ह, खास क के भोजपुरी गजल।
खाली भाषा से ही ना, पूरा मन मिजाज से ऊ भोजपुरी के गजलकार हवें।

भोजपुरी के लोकधर्मी गजलकार कहे में हमरा कवनो उलझन नइखे। काहे कि उनकर गजल जवना चीज से बनल बा, जवना दरब से (ई शब्द हम अपना बाबा से सुनले रहीं। ऊ पइसा– कउड़ी के अर्थ में प्रयोग करत रहलें। इहां द्रव्य के अर्थ में प्रयोग भइल बा।), ऊ लोक के ह। ऊ लोक खेत, फसल, खेती के साज सामान, घर, आंगन, चुल्हा चउका, झाड़ू बुहारू, आदमी जन, हिस्सा बखरा के संगे संगे अपना समय के राजनीति आ राजनीतिक घटना क्रम से हमेशा बोलत बतियावत लोक ह। ऊ थथमल लोक ना ह। एहिजा खरहरा से दुआर बहारत बाबूजी त मिलिए जइहें, आजी के स्मृति के संजोवे के जर्बदस्त तड़पो मिली–

"आजो मन में साध रहेला देखीं चेहरा आजी के
तनिको नाहीं याद परेला हमरा चेहरा आजी के।"

बहुत ईमानदार तड़प के अभिव्यक्ति बा एह में। आसिफ जी बता रहल बाड़न कि उनका छुटपने में उनकर आजी गुजर गइल रहली। उनकर कवनो तसवीर उनका मेमोरी में नइखे, सिवाय घर के लोग के बात बतकही में आजी के जिकिर के। उनका अफसोस एह बात के बा कि उनकर एगो फोटो तक नइखे। ऊ घर के लोग के बतकही आ अपना बाबूजी के सकल सूरत में अपना आजी के उटकेरे के आपन बेचौनी के गजल के विषय बनावत बाड़न। ई भावुकता ना कहाई, कहल बेलकुल ठीक ना होई। सब भुला देवे के एह कुकाठ काल में एह तरे अपना आजी के, पुरखिन के स्मृति के परिजनन के बात बतकहियन से चुन चुन के संजोवल आ एगो मुकम्मल सूरत गढ़े के कोशिश आदमी के आदमी भइला के पहचान ह।

"गोदी बइठल घर ले दुअरा दुअरा ले फिर अगना में
खूब नचावत रहुवीं का दो खींचत अंचरा आजी के।"

दुसरकी लाइन में 'का दो' जवन बा, तवना से समुझल आसान हो जात बा कि घर के लोग से सुनलके ऊ सुना रहल बाड़न, ई सुनलके उनका के आजी के खोज के तरफ झुकवले बा।

"उंचा नाक रहल होई गोरो होइहें इनके जइसन
बाबूजी में उटकेरीले अक्सर चेहरा आजी के।"

बाबूजी में आजी के उटकेरल, आजी के देखल भोजपुरी गजल में ई मानवोचित काम आसिफ जी ही कइले बाड़न। एह तरह के अनेक प्रसंग आसिफ जी के गजलन में देखल जा सकेला।

आसिफ जी के गजल गांव,घर, परिवार, देश, दुनिया तक के बात अपना जद में लेके चलेले। दिल्ली, पटना, नगवा,बाथे, बथानी, सिंगूर, नंदीग्राम तक अपना के ले गइल बिया। देखल जाय –

"सहल खूब पत्थर आ पानी, ए बाबू
बखरिया के झांझर पलानी, ए बाबू।
बहुत आग ओकरा करेजा में तवंके
धुआंला ना जेकर चुहानी, ए बाबू।
सुनीं ओकरो कुछ, बहुत जीयले बा
जे मउअत नियन जिंदगानी, ए बाबू।
नेवाइल कहां बा, अबो टीसते बा
करेजा में नगवा बथानी ए बाबू।"

चुहानी के आज किचेन पढ़ल जा सकेला। चुहानी के ना धुंआए के मतलब अभाव में चुल्हा उपास परल ह। जेकर चुल्हा में आग ना जरे, बेशक ओकरा करेजा में आग दवंकल करेला।

एह में 'नगवा' आ 'बथानी' के जिकिर बा। जाने के चाहीं कि ई दूनो बिहार के दूगो गांव ह जवन सामंती सेना के कुकृत्य जनसंहार के गवाह बा। शेर में बा कि एह दूनो जनसंहार के दर्द ना कम भइल बा आ ना भुलावल जा सकेला। शासन सत्ता आ न्यायपालिका जेके भुला देल चाहल, कुलि मामिले झुठला देलस, भोजपुरी गजल ओह के अप. ना करेजा में टांक लेलस।

आसिफ जी के गजल सांचो भोजपुरी मिजाज के गजल ह। भोजपुरी के अनेक एह तरह के शब्द मिलिहें स जेके लोग अब भुलाइल जा रहल बा। ऊ अपना अर्थ आ नया–नया संदर्भ के साथे उनका गजलन में आइल बाड़न स। आसिफ जी के गजल पढ़ के भोजपुरी के लोकधर्मी गजल के मिजाज के समझल जा सकेला।

❑❑

❍ रामगढ़, झारखण्ड

बउरहिया

डॉ.सुमन सिंह

" ए अम्मा जी उर्दी छुआए जात ह गांई जा लोग।" लइका क माई अम्मा लोगन के होस धरवलीं कि उ लोग काहें खातिर बोलावल गईल हईं जा।अम्मा लोग कढ़वलीं –

' जौं मैं जनतीं गनेस बाबा अइहन,
लीपि डरतीं अंगना दुआर
चनन छिड़कतीं ओहीं देव घरवा
चनन क सुन्नर सुबास
जौं मैं जनतीं सीतला मइया अइहन
लीपि डरतीं अँगना दुआर।'

गीत कढ़ावे वाली बड़की आजी ढ़ेर बूढ़ा गइल रहलीं।चारे–पाँच लाइन गावे में हफरी छोड़े लगलीं।एक जानी क सांस फूले लागल अउर दम्मा के मरीज नियन खांसे लगलीं।

"अरे काहें जान देले हईं ए जीजी।तनी सुस्ता लेहीं।केहू पनियों के त नइखे पूछत।" फौजदार बो भऊजाई से चिकारी कइलीं।

"तू त एक ले आग लगउनी हई रे ।अबहियें इँहा से जइबी अउर मनोजवा के माई के पट्टी पढ़ा अइबी कि ओकरे लइका के बिआह में केहू गनवो ना गावे वाला ह। अउरी३।" एतने में जीजी क दम्मा उखड़ गईल ऊ पसली धई–धई खांसे लगलीं।फौजदार बो उनके सरापे लगलीं–

" जे हम के देख के जरी ओके भगवान देखिहन।अबहीं त सबके दम्मा उखड़ल ह।अबहीं देखा का होला।" फौजदार बो हाथ नचावत जीजी के सरापत रहलीं कि लइका क माई चिचिआये लगलीं–

"का जी रउवा सभे बुढ़ौतियो में लइकन नियन लड़ब जा।बिआह –सादी क घर में अब हमके झगरो फरिआवे के पड़ी,आंय?" लइका के माई ओरी ले फटकार खा के बूढ़ा लोग फिर होस धइलीं जा कि ऊ लोग काहें के बोलावल गईल हईं जा। बिआह ले दू दिन पहिले ऊ लोगन के जीप में ठूंस के गाँव से मंगावल गईल रहे ।लइका के माई सहर में जा के बस गईल रहलीं बाकिर चाहत रहलीं कि बिधि–बिधान से बिआह होखे।पहिली बार उनके घर में बिआह होत रहे।घर में बड़–बूढ़ ना रहिहन त के बताई कि का कइसे होई एहि से कुल दयादी–पटिदारी क बूढ़ –पुरनिया बटोर लेवल गईल रहलीं जा।

फौजदार बो तनी हाथ–पैर से पोढ़ रहलीं एहि से बूढ़ा लोगन के सम्हारे खातिर बोला लेवल गईल रहलीं बाकिर उनके अउर लइका क माई में छतीस क आँकड़ा रहल।बूढ़ा लोग के गोड़धरिया कइके बोलावल गईल रहे बाकिर जब कवनो काम पड़े तबे इ लोग पूछल जायँ नाही त बरात –घर के एगो कोठरी में बसात ओढ़ना–बिछउना में दुबकल रहें लोग।

"ए बचिया तनी पानी लिया देतू हो।पीआसन परान जात ह।" एगो लइकी से बूढ़ा निहोरा कइलीं।

"बरात जाने वाली हैं हमें तैयार होना है,किसी और से मंगा लीजिये।" कहके लइकिया बहरे भाग गईल। बूढ़ा छटपटात रह गइलीं।

"कहत रहलीं न कि हमहन के ,के पूछी। लेकिन रउआ ना मनलीं बाकिर बिआह देखे क साध बुढ़ौतियो ले राउर ना बुतायल।" थर्मोकोल क गिलास में पानी थमावत फौजदार बो फिरो जीजी से अझुराये लगलीं।

"इ पलासटिक के गिलास में हम पानी ना पियब।" बूढ़ा पानी क गिलास थाम लेहलीं बाकिर पानी पिए में हिचकिचाये लगलीं।

"पी लिहिं हेतना भीड़–भाड़ में कंहवा से ईस्टील क गिलास आई ?"बूढ़ा केहुतरे पानी से परान जुड़वलीं।

"ए फौजदार बो तनी कुछ खाये के ले अवतू हो बड़ा भूख लागल ह।" बूढ़ा कई दिन क भूखायल कवनो नान्ह लईका नियन छछनत रहलीं।

"ए जीजी रउओ न अइसन बात बोलिला की पूछे के नइखे।इँहा कवनो हमरे हाथ में ह।चारो ओर घूम भइल.ीं।दू गो लडुओ नइखे भेटात कि ले आयीं।" फौजदार बो खुदे भुखायल रहलीं।होटल क कुल्ही कमरा में ताक–झाँक अईली।सब अपने –अपने में बाझल रहे।केहू तैयार होत रहे,केहू दूसरे के तैयार करत रहे।लड़िका क माई अउर बहिन तैयार होखे ब्यूटीपार्लर गईल रहलीं जा।केहू–केहू के ओ घरी चिन्हत ना रहे सब अपने सजे–सँवरे में लागल रहे।

बरात क जायेके बेर हो गईल रहे। लइका क माई खोजात रहलीं। पता चलल कि ऊ तैयार होये गयल हईं।लइका क पापा, चच्चा जब खुनुसन सुनगे लगलन जा तब जाके ऊ धउरल अइलीं।बूढ़ा लोग बोलावल गइलीं। हाली–हाली नहछू नहावन भयल।बूढ़ा लोग गवलीं जा–

" के आइ पोखरा खनावेला घाट बन्हावेला
केकर भरेला कंहार त राम जी नहावन।'
इमली घोटावल गईल त बूढ़ा लोग कढ़वलीं जा–
" भइया जे बइठे पलंग चढ़ बहिनी चउक पर
भइया खोलि देता दाम क पोटरीया औ इमली घोटावा।"

मऊर बान्हत क, परिछन के बेरी बूढ़ा लोग खूबे राग बन्हलीं जा बाकिर जब बरिआत जाये लागल त केहू इन्हन लोग के पुछबे ना करे।लइका क माई लइका के संगे गाड़ी में बइठ के चल दिहली।फौजदार बो गोहरवते रह गईली बाकिर केहू सुनलस ना।सब नाचत –गावत बैंड बाजा के पीछे –पाछे चल गयल।बूढ़ा लोग पाछे फेफियात रह गइलीं।केहुतरे फौजदार बो सबके टेकावत वापिस होटल चहुँपली।घंटा भर बाद फौजदार बो लइका के माई क फोन आयल।

" मनोजवा क माई क फोन रहल ह, कहत रहलीं ह कि नकटा क कुल समान रख गईल हईं।होटल वालन के सात पलेट पूड़ी–तरकारी के कह देले हईं।जब ले हम.हन के खाएब जा तबले ऊ आ जइहैं। लुक्का लागो अइसन कुल बिआह –सादी में ।ई कवनों बात ह जी, कि माई –चाची बरिआत क मजा लुटें अउर दयाद –पटीदार नकटा खेल्ले आंय। " फौजदार बो कहत जायँ अउर मुस्किआय के भउजी ओर ताकत जायँ।भउजी भूख अउर खाँसी से बेहाल रहलीं अब ऊ फौजदार बो के बउराह जस टुकुर –टुकुर ताके लगल.ीं।लगे कि उनके कुछ बुझाते –चिन्हात ना ह।

" का ए जीजी बड़ा सउख से चलल रहलीं ह जा रउआ लोग बिआह देखे बाकिर बउरहिया बनाके चल गइलीं न मनोज क माई ? " फौजदार बो क बोली टीबोली सुनत बूढ़ा लोग केवाड़ी ओर कान रोपले रहलीं जा , कि कब केहू खाना क पलेट लिहले आई आ कि खाये बदे बोलाई।

❑❑

❍ वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

अ अपनइत

(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)

अध्यक्ष : **सरोज त्यागी** संयोजक : **जे.पी. द्विवेदी**

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600 | चार बरिस : 2100 | आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।